RNI No.-13466/1963
Postal Regd. No. GPOLW-NP/181/2024-26
Total No. of Page - 44
Postal Date : 18 & 19 Every Month
मूल्य : 15.00

अगस्त, 2024

उत्तर प्रदेश के सहकारी आन्दोलन का दर्पण

सहकारिता

हिन्दी मासिक पत्रिका

कोऑपरेटिव कॉन्फ्रेंस

"सहकार से समृद्धि"

सहकारिता मंत्री एवं प्रमुख सचिव सहकारिता, कार्यालय आयुक्त एवं निबन्धक, सहकारिता के कार्मिकों के मृतक आश्रितों को नियुक्ति पत्र भी प्रदान करते हुये

xko&in'k ,o n'k&fon'k rd dh lgdkjh xfrfof/k;k dh tkudkjh gr i<

''सहकारिता''

(हिन्दी मासिक पत्रिका)

lgdkfjrk] lekt okn] df"k ipk;rhjkt ,o xkeh.k fu;kt u dk Kku ni.k

''सहकारिता''

(हिन्दी साप्ताहिक समाचार पत्र)

lgdkjh xfrfof/k;k dh tkudkjh gr

सहकारिता पढ़िये, सहकारिता से जुड़िये

सहकारिता

वर्ष-62 अंक-02 अगस्त, 2024

संरक्षक

अनिल कुमार (आई.ए.एस.)
आयुक्त एवं निबन्धक
सहकारिता, उ0प्र0

श्रीकान्त गोस्वामी
प्रबन्ध निदेशक/प्रधान सम्पादक

सवीन्द्र सिंह
महाप्रबन्धक (प्रशा0,शिक्षा)

सुनील कुमार दिवाकर
प्रभारी सम्पादक

पवन कुमार वर्मा
आवरण एवं लेजर टाइप/प्रूफ रीडर

सदस्यता शुल्क :

एक प्रति : 15.00 रूपये
वार्षिक (बारह अंक) : 150.00 रूपये (डाक से)
आजीवन : 1500.00 रूपये

सदस्यता शुल्क व्यक्तिगत या बैंक ड्राफ्ट/चेक द्वारा सम्पादक ''सहकारिता'' यू0पी0 कोआपरेटिव यूनियन लि0, 14, डा0 भीमराव अम्बेडकर मार्ग, लखनऊ (उ0प्र0) के पते पर भेजें।

सम्पादकीय कार्यालय :

यू0पी0 कोआपरेटिव यूनियन लि0 14, डा0 भीमराव अम्बेडकर मार्ग, लखनऊ (उ0प्र0) 226 001.
फोन नं0: 0522-4004577 मो0 नं0 : 9415094114
ई-मेल : sahkarita@gmail.com,

स्वत्वाधिकारी यू0पी0 कोऑपरेटिव यूनियन लि0, प्रकाशक, मुद्रक, सुनील कुमार दिवाकर द्वारा सहकारी प्रेस 14, डा0 भीमराव अम्बेडकर मार्ग, लखनऊ (उ0प्र0) से मुद्रित एवं प्रकाशित। प्रभारी सम्पादक - सुनील कुमार दिवाकर।

प्रकाशित लेखों में व्यक्त विचार लेखकों के हैं। इसमें सम्पादक का सहमत होना अनिवार्य नहीं है। सभी विवादों का न्यायालय क्षेत्र लखनऊ ही मान्य होगा

अनुक्रमणिका

क्र.सं. विषय ..... पृ0सं0

1. सम्पादकीय 4
2. 'पेड़ लगाओ-पेड़ बचाओ' वृक्षारोपण जनअभियान-2024 5
3. 'सहकार से समृद्धि' विषय पर गोष्ठी का आयोजन 8
3. सहकारिता क्षेत्र को बढ़ावा देने में नाबार्ड का सराहनीय योगदान .10
4. उ0प्र0 कोआपरेटिव यूनियन द्वारा संचालित प्रशिक्षण केन्द्रों पर किया गया वृहद वृक्षारोपण 12
5. यहि पाखे पतिव्रत ताखे धरो 14
   - डॉ0 ओ.पी. मिश्र
6. पानी! बरसे न... 16
   - उमेश प्रकाश
7. आरोग्य : ''सेहत पर जागरूकता अभियान'' 17
   - पूजा गुप्ता
8. अंतरराष्ट्रीय युवा दिवस के संदर्भ में युवा विमर्श 18
   - गौरी शंकर वैश्य ''विनम्र''
9. मातृशक्ति और उसका त्याग 21
   - महेश कुमार केशरी
10. गांव की भोर 23
    - मुकेश कुमार ऋषि वर्मा
11. सौंफ शरीर को बनाता है निरोग 24
    - बद्री प्रसाद वर्मा अनजान
12. पशुधन पर विशेष ध्यान दे रही सरकार 26
    - रामफेर
13. 'मां की याद' 30
    - सतीश 'बब्बा'
14. मौन चीत्कार 31
    - अयोध्या प्रसाद
15. डॉ0 श्यामा प्रसाद मुखर्जी भारतीय राजनीति के प्रणेता 33
    - अखिलेश सिंह चन्देल
16. बूढों का कैसा हो मौसम 36
    - श्यामल बिहारी महतो
17. 'फैलाओ हर जगह हरियाली' 36
    - हरीराम यादव फैजाबादी
18. सावन के महीने में नॉनवेज को लेकर क्या कहता है विज्ञान 37
    - श्रीमती दीप माला सिंह
19. पवित्र बंधन रक्षाबन्धन 38
    - श्रीमती कुसुम सिंह
20. राष्ट्र निर्माण में साहित्यकार की भूमिका 40
    - श्रीमती ऊषा अरोड़ा
21. सौतेली माँ का मतलब 'सौतेलापन' नहीं है ! 41
    - चन्द्रकान्ता शर्मा

❑❑❑

सहकारी बन्धुओं व पाठकों से अपील

समस्त पाठकों, सहकारी जगत से जुड़े सरकारी व संस्थागत अधिकारी, कर्मचारी तथा सहकारी बन्धुओं से अनुरोध है कि आप अपने जीवन से जुड़ी कोई विशेष उपलब्धि/उत्कृष्ट कार्य हेतु संतुलित व्याख्या, सुझाव व विचार ''सहकारिता'' मासिक पत्रिका, यू0पी0 कोआपरेटिव यूनियन लि0, 14, डा0 भीमराव अम्बेडकर मार्ग, लखनऊ (उ0प्र0) पर भेज सकते हैं, या फिर ई-मेल sahkarita@gmail.com पर कर सकते हैं। आपके विचार सादर आमंत्रित हैं।

- प्रभारी सम्पादक

सुनील कुमार दिवाकर

सम्पादक की कलम से

सहकारिता का लक्ष्य सिर्फ लाभार्जन करना नहीं होता। इसी तरह सभी को राष्ट्रहित, सामाजिक जिम्मेदारी व ग्राहकों के कल्याण को समझना चाहिए। स्व-रोजगार के क्षेत्र में वे ज्यादा तरक्की करते हैं जो सिर्फ अपने लाभ में अंधाधुंध वृद्धि के लिए प्रोडक्ट की गुणवत्ता से समझौता नहीं करते। उन्हीं की साख बनती है। दरअसल बहुत से लोग तो घर में बनी चीजें कम और बाजार की बनी चीजें खाना अधिक पसंद करते हैं किन्तु हानिकर खाद्य पदार्थो के सेवन से उनके स्वास्थ्य पर खराब असर पड़ता है। वे नुकसान दायक चीजों का उपभोग करके खतरनाक रोगों की चपेट में आते हैं। यद्यपि हानिकर खाद्य पदार्थो के व्यापार पर लगाम लगाने के लिए बहुत से कायदे कानून हमारे देश में मौजूद है। फिर भी बेजा फायदे के लिए हानिकर खाद्य पदार्थो का उत्पादन व व्यापार होता है। अतः हानिकर खाद्य खूब धड़ल्ले से बनते व बिकते रहते हैं। फलतः बहुत से ग्राहक उनके दुष्प्रभाव सहते रहते हैं अतः खाद्य पदार्थो के निर्माता अपनी यह जिम्मेदारी जरूर निभाएं।

पोषण हेतु पहली और सबसे बड़ी जरूरत अनाज, फल, सब्जी व दूध है लेकिन रसायनिक उर्वरकों तथा जहरीले कीटनाशकों के अंधाधुंध छिड़काव से कृषि उपज दूध और अन्य वनस्पतियां अब जहरीले असर से प्रभावित हो रही है। इसके अतिरिक्त ज्यादा से ज्यादा दूध निचोड़ने के लालच में गाय भैस आदि पशुओं को आक्सीटोसिन नाम हारमोन्स का इंजेक्शन लगाया जाता है जो प्रतिबंधित है इसका अविवेकपूर्ण प्रयोग अमृततुल्य दूध को भी विषैला बना देता है। इस प्रकार बढ़ते रसायनों का असर दूध में भी बढ़ रहा है। अतः पियो गिलास भर दूध का नारा पियो गिलास भर जहर में तब्दील होता लग रहा है, क्योंकि अधिकाधिक मुनाफा कमाने के लालच में ज्यादातर व्यापारी अपने स्वार्थ में अंधे हो रहे हैं।

बदकिस्मती से अब दूध भी सिंथेटिक बन कर फायदे की जगह नुकसान दे रहा है। अतः उसे पीते पिलाते हुए भी डर लगता है, क्योंकि यूरिया, डिर्टजेंट आफर रिफांइड आयल आदि से बने सिंथेटिक दूध का कारोबार देशभर में सुरसामुख की तरह बढ़ रहा है। हम श्वेत क्रांति के बाद से दुनिया भर में सबसे बड़े दूध उत्पादक देश के वासी हैं, लेकिन डेयरी के क्षेत्र में हुए अनुसंधान विकास के बावजूद आज भी एक आम उपभोक्ता के पास कोई ऐसी सरल तरकीब नहीं होती जिससे वह अपने दूध के असली नकली होने की पहचान कर सकें। फिर भी सिंथेटिक दूध व मिलावटी घी का हानिकर कारोबार को रोकना जरूरी है। ❑

"पेड़ लगाओ-पेड़ बचाओ" वृक्षारोपण जनअभियान-2024

❑ मुख्यमंत्री ने एक दिन में प्रदेश में 36 करोड़ 50 लाख पौध रोपण महाअभियान का शुभारम्भ किया

उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने 05 जून, 2024 को विश्व पर्यावरण दिवस के अवसर पर देशवासियों से 'एक पेड़ मां के नाम' पर लगाने का आह्वान किया था। दुनिया के सबसे बड़े लोकतंत्र के संवैधानिक प्रमुख होने के नाते प्रधानमंत्री का यह आवाह्न प्रत्येक भारतवासी के लिए मंत्र बनना चाहिए।

मुख्यमंत्री ने यहां कुकरैल नदी तट पर स्थित सौमित्र वन में 'पेड़ लगाओ-पेड़ बचाओ जन अभियान' के अन्तर्गत एक दिन में प्रदेश में 36 करोड़ 50 लाख पौध रोपण महाअभियान का शुभारम्भ किया। इस अवसर पर मुख्यमंत्री जी ने हरिशंकरी वृक्ष वाटिका स्थापित की। उन्होंने छात्र-छात्राओं को पौध वितरित कीं तथा 10 किसानों को कार्बन क्रेडिट से हुई आय के प्रतीकात्मक चेक प्रदान किये।

मुख्यमंत्री ने प्रसन्नता व्यक्त करते हुए कहा कि इस महाअभियान से जुड़ने तथा एक पेड़ मां के नाम लगाने का शुभ अवसर लगभग प्रदेश के प्रत्येक परिवार को प्राप्त होने जा रहा है। इस पवित्र अभियान के अंतर्गत एक ही दिन में प्रदेश में लगभग

03 पेड़ प्रत्येक मातृशक्ति के नाम पर लगने जा रहे हैं। इसके अंतर्गत 36 करोड़ 50 लाख पेड़ लगाए जाएंगे। आज प्रातःकाल प्रारम्भ हुए कार्यक्रम के अंतर्गत अब तक लगभग 12 करोड़ पौध रोपण का कार्य सम्पन्न किया जा चुका है। 'एक पेड़ मां के नाम' अभियान के अंतर्गत पेड़ लगाने के साथ-साथ उसका संरक्षण भी करना होगा। इसके माध्यम से हम अपने पर्यावरण को सुरक्षित करने के कार्यक्रम से जुड़ेंगे। इसीलिए कहा गया है कि 'पेड़ लगाओ

पर्यावरण बचाओ'।

मुख्यमंत्री ने कहा कि वर्ष 2017 में प्रधानमंत्री के मार्गदर्शन व नेतृत्व में प्रदेश में वृक्षारोपण महाअभियान से जुड़ने का कार्य किया गया। आज जहां प्रदेश में एक ही दिन में 36 करोड़ 50 लाख पौध रोपण किया जाएगा, वहीं विगत 07 वर्षों में राज्य सरकार ने अब तक 168 करोड़ पौध रोपित कीं। इस अभियान के अंतर्गत लगाए गए 75 से 80 प्रतिशत पेड़ अभी भी जीवित हैं। वैश्विक संस्थाएं इस अभियान को मान्यता प्रदान कर रही हैं।

आज के इस कार्यक्रम में 10 किसानों को कार्बन क्रेडिट के अंतर्गत प्रोत्साहन राशि प्रदान की गई। इन किसानों ने कार्बन उत्सर्जन से होने वाली पर्यावरण क्षति की भरपाई पेड़ लगाकर की है। इन्होंने इसके अंतर्गत अपना रजिस्ट्रेशन करवा कर कार्यवाही को आगे बढ़ाया। वैश्विक संस्थाओं ने इनके कार्यों का निरीक्षण किया। नेट जीरो का लक्ष्य प्राप्त करने की दिशा में किसानों को यह प्रोत्साहन राशि प्रदान की गई है।

इन प्रयासों के परिणामस्वरूप प्रदेश सरकार को 200 करोड़ रूपये का अनुदान प्राप्त हो रहा है। इसके अंतर्गत कार्बन उत्सर्जन को रोकने के लिए लगाए गए पेड़ों के कारण किसानों को लगातार 05 वर्ष तक धनराशि प्रदान की जाएगी। पहले चरण में आज 25 हजार किसानों को इस सुविधा का लाभ प्रदान किया जा रहा है। इसके तहत फलदार, औषधीय, पीपल, पाकड़, बरगद, हरिशंकरी आदि के पौध रोपण के साथ-साथ नवग्रह वाटिका, नक्षत्र शाला आदि स्थापित करने का कार्य सम्पन्न किया जा रहा है।

मुख्यमंत्री ने कहा कि आज से 50 वर्ष पूर्व कुकरैल नदी अपने जीवन्त स्वरूप में थी। यह कुकरैल से निकलकर गोमती नदी में मिलती थी, लेकिन वर्ष 1984 के पश्चात इस नदी को भू-माफियों ने अपने स्वार्थ के लिए पाटना प्रारम्भ किया। परिणामस्वरूप नदी, नाले में परिवर्तित हो गयी तथा बस्तियों के ड्रेनेज को उड़ेलने का माध्यम बन गई। जिस नदी पर मानवीय सभ्यता और संस्कृति बसी हुई थी, उसको नष्ट कर दिया गया। इन कार्यों से गोमती नदी को भी प्रदूषित किया गया।

मुख्यमंत्री ने कहा कि प्रदेश सरकार ने तय किया है कि लखनऊ आने वाले अतिथियों, पर्यटकों के साथ-साथ लखनऊ व प्रदेशवासियों के लिए कुकरैल में नाइट सफारी की स्थापना की जाएगी। नाइट सफारी लोगों के मनोरंजन के साथ-साथ ज्ञानवर्धन का केंद्र भी बनेगी। पूरे कुकरैल क्षेत्र को इको टूरिज्म के बेहतरीन स्पाट के रूप में विकसित किया जाएगा। इसी क्रम में इस क्षेत्र से अतिक्रमण को हटाया गया। लखनऊ विकास प्राधिकरण ने सुप्रीम कोर्ट के आदेश से यह जगह खाली कराई है। एल0डी0ए0 ने प्रशासन की सहायता से मकानों की रजिस्ट्री कराने वाले तथा आवास विहीन लोगों के 2,100 परिवारों को एक-एक आवास उपलब्ध कराने का कार्य सम्पन्न किया है। उनका व्यवस्थित पुनर्वास किया गया है।

भू माफिया बनकर लोगों को ठगने तथा पर्यावरण को नुकसान पहुंचाने वाले लोगों के खिलाफ एफ0आई0आर0 दर्ज कर कार्रवाई की गई। जो क्षेत्र पहले अकबरनगर के नाम पर पाल्यूशन का माध्यम बना हुआ था, आज वहां पर भगवान श्री राम के छोटे भाई लक्ष्मण जी के नाम पर सौमित्र वन स्थापित किया गया है। उन्होंने कहा कि आज उन्हें इस सौमित्र वन में हरिशंकरी वृक्ष की वाटिका लगाने का अवसर प्राप्त हुआ। सौमित्र वन के दूसरी ओर शक्तिवन लगने जा रहा है। शक्तिवन भारत की नदी संस्कृति को बचाने का माध्यम बनेगा।

मुख्यमंत्री ने कहा कि आज के इस अभियान के साथ जनप्रतिनिधिगण, प्रदेश के सभी विभाग तथा समाज के विभिन्न तबके के लोग जुड़े हैं। जनपद सीतापुर में प्रदेश की राज्यपाल श्रीमती आनंदीबेन पटेल जी इस अभियान को आगे बढ़ा रही हैं। उन्होंने प्रदेशवासियों का आह्वान करते हुए कहा कि प्रदेश में पेड़ों की कमी नहीं है। इनमें छायादार, इमारती लकड़ी, फलदार, औषधीय तथा सजावटी आदि विविध प्रकार के पौधे हैं। प्रदेश सरकार ने जगह-जगह वाटिका विकसित करने का निर्णय लिया है। सौमित्र वन और शक्तिवन की तर्ज पर अलग-अलग जगहों पर हरिशंकरी, नवग्रह, नक्षत्र आदि वाटिकाओं को लगाया जाएगा।

मुख्यमंत्री ने कहा की सायंकाल होते-होते प्रदेशवासियों को वृक्षारोपण अभियान के लक्ष्य को प्राप्त करने का शुभ समाचार मिलेगा। इसके साथ ही हम इस पवित्र अभियान को नई ऊंचाई पर पहुंचने का कार्य करेंगे। प्रधानमंत्री आवास योजना के 56 लाख लाभार्थियों के घरों में एक-एक सहजन का पेड़ भी लगाया जा रहा है। प्रदेश में विरासत वृक्षों को बचाने की मुहिम को आगे बढ़ाया गया है। 100 वर्ष पुराने पेड़ों को प्रत्येक परिस्थिति में बचाना है। कहा जाता है कि जनपद बाराबंकी में स्थित द्वापर युग का कल्पवृक्ष 5,000 वर्ष पुराना है। इसे अनेक पीढ़ियों ने देखा है।

लखनऊ प्रदेश की राजधानी है, इसने स्वयं को प्रदेश के सबसे बड़े महानगर के रूप में स्थापित किया है। प्रदेश सरकार ने कल ही इसको स्टेट कैपिटल रीजन के रूप में विकसित करने तथा इसके आसपास के क्षेत्र को आर्थिक प्रगति के नए मानक से जोड़ने के लिए कार्यवाही को आगे बढ़ाया है। विकास का लाभ लम्बे समय तक लोगों को तब प्राप्त होगा, जब हम भौतिक विकास करने के साथ-साथ उससे होने वाली पर्यावरणीय क्षति को न्यूनतम स्तर तक ले जाएंगे।

मुख्यमंत्री ने कहा कि प्रदेश में प्रधानमंत्री जी के मार्गदर्शन में पर्यावरण संरक्षण के लिए अनेक कदम उठाए गए। वर्ष 2017 से पूर्व प्रदेश के शहरों में हैलोजन स्ट्रीट लाइटें लगायी गयी थी। इससे अधिक विद्युत खपत के साथ-साथ कार्बन उत्सर्जन भी ज्यादा होता था। इन्हें एल0ई0डी0 स्ट्रीट लाइटों से बदला गया। राज्य में ऐसी 16 लाख एल0ई0डी0 स्ट्रीट लाइटें लगाई गई हैं। सिंगल यूज प्लास्टिक का बैन, पर्यावरण तथा जीव जगत की रक्षा के लिए उत्तम प्रयास हो सकता है। प्रदेश में यह कार्य भी किया गया है। ❑

'सहकार से समृद्धि' विषय पर गोष्ठी का आयोजन

खाद, बीज एवं उर्वरक का पर्याप्त स्टाक रखा जाय तथा किसानों को समय से उपलब्ध कराया जाय- जे0पी0एस0 राठौर

उ.प्र. कोआपरेटिव बैंक लि. एवं उ.प्र. कोआपरेटिव यूनियन (पी.सी.यू.) के संयुक्त तत्वाधान में पी.सी.यू. सभागार, लखनऊ में आज 'सहकार से समृद्धि' विषय पर कोआपरेटिव कान्फ्रेंस का आयोजन किया गया, जिसमें मुख्य अतिथि मा. सहकारिता राज्यमंत्री (स्वतंत्र प्रभार), जे.पी.एस. राठौर ने अपने संबोधन में कहा कि 'सहकार से समृद्धि' का उद्देश्य बैंकों को वित्तीय रूप से आत्मनिर्भर बनाते हुए अधिक से अधिक व्यवसाय एवं ऋण वितरण के लिए भारत सरकार की तर्ज पर नवाचार का अधिकतम प्रयोग किया जाय। उन्होंने बैंकों को लाभ की स्थिति में लाने के लिए अधिकारियों और कर्मचारियों को बधाई देते हुए कहा कि मा0 मुख्यमंत्री के कुशल निर्देशन में बैंकों की सेवाओं को और जनोपयोगी बनाया जाय। उन्होंने यह भी कहा कि खाद, बीज एवं उर्वरक का पर्याप्त स्टाक रखा जाय तथा किसानों को समय से उपलब्ध कराया जाय।

श्री राठौर ने यह भी कहा प्रदेश में खाद एवं बीज की कोई समस्या नहीं है। किसानों को इसका लाभ मिलना चाहिए ताकि सरकार द्वारा किसानों की आमदनी को दुगुना करने के संकल्प को पूरा

बैंकों की सेवाओं को और जनोपयोगी बनाया जाय-सहकारिता मंत्री

किया जा सके। साथ ही प्रदेश की अर्थव्यवस्था को 01 ट्रिलियन डालर की अर्थव्यवस्था बनाने में सहकारिता का अधिकतम योगदान संभव हो सके।

इस अवसर पर सहकारिता मंत्री ने पैक्स डाटा मैनेजमेन्ट पोर्टल (PDMP) का शुभारम्भ किया। साथ ही साथ सहकारी संस्थाओं के विकास एवं सुदृढ़ीकरण हेतु सुझाव तथा भविष्य में सहकारी संस्थाओं को मजबूती प्रदान करने और विभाग को नयी ऊँचाइयों पर ले जाने को लेकर चर्चा की गयी।

सहकारिता मंत्री द्वारा जिला सहकारी बैंक की व्यवसायिक प्रगति में उल्लेखनीय योगदान हेतु 06 जिला सहकारी बैंकों के सभापतियों, जिला सहायक आयुक्त एवं सहायक निबन्धकों तथा सचिव/मुख्य कार्यपालक अधिकारियों को सम्मानित करने के साथ-साथ प्रदेश के मण्डलों में उत्कृष्ट प्रदर्शन करने के लिए प्रत्येक मण्डल से एक संयुक्त आयुक्त एवं संयुक्त निबन्धक को सम्मानित किया गया।

सहकारिता मंत्री ने एमएसएमई योजना के अन्तर्गत वीरभान सिंह को रू0 30.00 लाख तथा मुख्यमंत्री स्वरोजगार योजना के अन्तर्गत सुश्री सुशीला को रू0 25.00 लाख एवं नीरज जायसवाल को रू0 25.00 लाख का चेक वितरित किया।

प्रमुख सचिव राजेश कुमार सिंह ने सहकारी संस्थाओं के विकास एवं सुदृढ़ीकरण के विषय पर चर्चा करते हुए बी-पैक्स के कार्य एवं व्यवसाय को आगे बढ़ाने, एआईएफ योजनान्तर्गत गोदाम निर्माण एवं उनके उपयोग के साथ-साथ भारत सरकार द्वारा शुरू किये गये विभिन्न पहलुओं जैसे कामन सर्विस सेन्टर एवं जन औषधि केन्द्र तथा राज्य सरकार एवं भारत सरकार द्वारा संचालित योजनाओं को आमजन तक पहुँचाने हेतु दिशा-निर्देश दिये।

आयुक्त एवं निबन्धक अनिल कुमार ने शीर्ष बैंक के साथ-साथ प्रदेश के सभी 50 जिला सहकारी बैंकों को सहकारी क्षेत्र में डिजिटल टेक्नोलाजी का अधिकतम उपयोग करते हुए सरकार की योजनाओं को किसानों तक पहुँचाने तथा जिला सहकारी बैंकों से इन्टरनेट/मोबाइल बैंकिंग सुविधा को शीघ्र प्रारम्भ किये जाने की अपेक्षा की गयी तथा प्रदेश में भी पैक्स को मजबूत करने की दिशा में कार्य करने पर विशेष बल दिया गया।

सहकारिता मंत्री ने कार्यालय आयुक्त एवं निबन्धक, सहकारिता के 09 कार्मिकों के मृतक आश्रितों को नियुक्ति पत्र भी प्रदान किया।

उ.प्र. कोआपरेटिव बैंक के अपर प्रबन्ध निदेशक/अपर सचिव, कैडर एस.सी. मिश्र ने आयोजित कोआपरेटिव कांफ्रेंस में उपस्थित समस्त अतिथियों का धन्यवाद ज्ञापित किया।

इस अवसर पर उ.प्र. कोआपरेटिव बैंक के सभापति जितेन्द्र बहादुर सिंह एवं प्रबन्ध निदेशक आर.के. कुलश्रेष्ठ, पी.सी.यू. के सभापति सुरेश गंगवार एवं प्रबन्ध निदेशक श्रीकान्त गोस्वामी, सहकारी संस्थाओं के प्रबन्ध निदेशक, समस्त जिला सहकारी बैंकों के सभापति एवं मुख्य कार्यपालक अधिकारी के साथ-साथ सहकारिता विभाग के अन्य वरिष्ठ अधिकारी उपस्थित रहे। ❑❑

सहकारिता क्षेत्र को बढ़ावा देने में नाबार्ड का सराहनीय योगदान

नाबार्ड ने अपने निर्धारित लक्ष्यों को पूरा करने में प्राप्त की सफलता -जे0पी0एस0 राठौर

प्रदेश के सहकारिता राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार) जे0पी0एस0 राठौर ने उत्तर प्रदेश में कृषि और सहकारिता क्षेत्र को बढ़ावा देने मे नाबार्ड के योगदान की सराहना की। उन्होंने इस बात पर जोर दिया कि नाबार्ड ने अपने निर्धारित लक्ष्यों को पूरा करने में सफलता प्राप्त की है और वर्तमान में यह भारत की ग्रामीण विकास यात्रा का एक मजबूत स्तंभ बन चुका है। उन्होंने नाबार्ड की कार्य संस्कृति और उसके अधिकारियों की प्रशंसा की और सहकारी समितियों के सामने आने वाले सबसे चुनौतीपूर्ण मुद्दों को धैर्यपूर्वक सुनने और उनके समाधान प्रदान करने पर जोर दिया।

सहकारिता मंत्री राठौर ने गोमती नगर, लखनऊ स्थित राष्ट्रीय कृषि एवं ग्राम विकास बैंक (नाबार्ड) उ0प्र0 क्षेत्रीय कार्यालय के 43वां स्थापना दिवस समारोह को बतौर मुख्य अतिथि संबोधित कर रहे थे, जिसका विषय सहकारिता से सशक्तिकरण रहा। इस दौरान उन्होंने कहा कि 2047 तक भारत को विकसित देश बनाने का लक्ष्य तभी प्राप्त किया जा सकता है जब उत्तर प्रदेश अग्रणी भूमिका निभाए। उन्होंने प्रदेश की वन ट्रिलियन डालर की अर्थव्यवस्था के लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए राज्य में सहकारी

समितियों और पैक्स को मजबूत करने के महत्व पर जोर दिया।

स्वागत भाषण देते हुए नाबार्ड उत्तर प्रदेश क्षेत्रीय कार्यालय के मुख्य महाप्रबंधक एस. के. डोरा ने उत्तर प्रदेश सरकार के माननीय सहकारिता मंत्री का स्वागत किया तथा इस अवसर पर उपस्थित होने के लिए उनका धन्यवाद किया। उन्होंने विस्तार से बताया कि कैसे नाबार्ड ने लाखों ग्रामीणों के दिलों को हुआ है तथा कैसे वर्ष 1992-93 के दौरान गरीबों के लगभग 500 स्वयं सहायता समूहों को औपचारिक वित्तीय संस्थाओं से जोडने के लिए एसएचजी- बीएलपी के साथ इसके प्रारंभिक प्रयोग को नाबार्ड द्वारा दुनिया के सबसे बड़े माइक्रोफाइनैस कार्यक्रम में बदल दिया गया है। उत्तर प्रदेश में अपनी स्थापना के बाद से नाबार्ड ने ग्रामीण बुनियादी ढांचे के वितपोषण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है, जिससे बाढ़ सुरक्षा उपायो, ग्रामीण विद्यालयों तथा वाटरशेड विकास पहलों के अलावा 54.11 लाख हेक्टेयर की सिचाई क्षमता, 3.01 लाख मीटर ग्रामीण पुल तथा 46000 किलोमीटर से अधिक ग्रामीण सड़कें बनाने में मदद मिली है। उन्होंने इस बात पर भी जोर दिया कि केसीसी नाबार्ड की प्रमुख वितीय इंजीनियरिंग पहलों में से एक है, जिसने उत्तर प्रदेश के लाखों किसानों को ऋण प्राप्त करने में आसानी प्रदान की है। पिछले 10 वर्षों में, नाबार्ड ने उत्तर प्रदेश में 62000 करोड़ रूपये से अधिक अल्पकालिक पुनर्वित, 22000 करोड़ रूपये दीर्घकालिक पुनर्वित और 18000 करोड़ रूपये का प्रत्यक्ष पुनर्वित उपलब्ध कराया है। इन सभी उपलब्धियों को बताते हुए उन्होंने कमजोर सहकारी बैंकों के सामने आने वाली चुनौतियों पर भी प्रकाश डाला, जैसे उच्च एनपीए, उच्च असंतुलन, कम नेटवर्थ और कम लाभप्रदता तथा परिसंपतियों पर कम रिटर्न, जिसके लिए इन सहकारी बैंकों की वितीय स्थिति में सुधार के लिए केंद्रित कार्रवाई की आवश्यकता है।

इस अवसर पर नाबार्ड ने ग्रामीण विकास में विभिन्न हितधारकों के उत्कृष्ट योगदान को सम्मानित किया। यूपीएससीबी और 10 डीसीसीबी तथा 03 पैक्स की व्यवसाय विस्तार, वित्तीय समावेशन और नई प्रौद्योगिकियों की अपनाने आदि में उनके उत्कृष्ट कार्यों के लिए सम्मानित किया गया। बाराबंकी जिले के मुबारकपुर और बरैया में और बहराइच जिले के कटरा बहादुरगंज में बहुउद्देशीय पैक्स को पैक्स कम्प्यूटरीकरण कार्य के तहत उनके उत्कृष्ट कार्य के लिए सम्मानित किया गया, जिसने पैक्स के संचालन और व्यवसाय विविधीकरण में पारदर्शिता और बढ़ी हुई दक्षता का मार्ग प्रशस्त किया है जिसके लिए उन्हें सम्मानित किया गया।

03 एफपीओ अर्थात् ओजोन एफपीसी लिमिटेड, सीतापुर, पूर्वांचल पोल्ट्री प्रोड्यूसर कंपनी लिमिटेड, देवरिया और अल्फीजो सियाना मैंगो वैरायटी प्रोड्यूसर कंपनी लिमिटेड, बुलंदशहर को भी अपने परिचालन क्षेत्र में छोटे और सीमांत किसानों की उपज के सामूहिकीकरण और उन्हें टिकाऊ व्यापार के अवसर प्रदान करने में उनके प्रदर्शन के लिए इस कार्यक्रम में सराहना की गई। समारोह में राज्य सरकार, भारतीय रिजर्व बैंक, राज्य भर के वरिष्ठ बैंकर्स और अन्य संस्थाओं के प्रतिनिधियों ने भी भाग लिया। कार्यक्रम का समापन माननीय मंत्री द्वारा 'एक पेड़ माँ के नाम' अभियान के उपलक्ष्य में एक पौधा रोपने के साथ सम्पन्न हुआ। ❑

'पेड़ लगाओ-पेड़ बचाओ' वृक्षारोपण जनअभियान-2024 के तहत

उ0प्र0 कोआपरेटिव यूनियन द्वारा संचालित प्रशिक्षण केन्द्रों पर किया गया वृहद वृक्षारोपण

प्रदेश में 'पेड़ लगाओ-पेड़ बचाओ' जन-अभियान वर्ष 2024-25 के अन्तर्गत उ0प्र0 कोआपरेटिव यूनियन लि0 (पी.सी.यू.) द्वारा प्रदेश में स्थापित सभी प्रशिक्षण केन्द्रों पर पौधरोपण किया गया। उक्त कार्यक्रम के अन्तर्गत यू.पी.काआपरेटिव यूनियन के सभापति सुरेश गंगवार ने संस्था द्वारा संचालित सहकारी प्रशिक्षण केन्द्र अयोध्या के परिसर में वृक्षारोपण किया। अयोध्या ट्रेनिंग सेन्टर पर सभापति के अलावा पीसीयू के संचालक रामहेत एवं निजी सचिव सभापति आनन्द श्रीवास्तव एवं सेन्टर के समस्त कर्मचारियों ने भी वृक्षारोपण किया। उक्त अवसर पर श्री गंगवार ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने ग्लोबल वॉर्मिंग जैसी चुनौतियों से बचने के लिए देशवासियों से 'एक पेड़ मां के नाम' लगाने का अभिनव आह्वान किया है, इसमें सभी को बढ़चढ़ कर हिस्सा लेना चाहिए। इसी क्रम में आज हमारी संस्था द्वारा पूरे प्रदेश में स्थापित प्रशिक्षण केन्द्रों पर वृक्षारोपण किया जा रहा है।

सहकारी प्रशिक्षण केन्द्र वाराणसी के परिसर में संस्था के प्रबन्ध निदेशक श्रीकान्त गोस्वामी एवं संचालक राम प्रकाश दूबे ने वृक्षारोपण किया।

इसीक्रम मे महोबा ट्रेनिग सेन्टर पर संचालक संतोष कुमार सोनी की देख रेख में दिनेश कुमार तिवारी एवं वहां मौजूद समस्त कर्मचारियों द्वारा वृक्ष लगाये गये।

हेवरा-इटावा में संस्था द्वारा संचालित प्रशिक्षण

वन महोत्सव 2024 'पेड़ लगाओ-पेड़ बचाओ' अभियान के अन्तर्गत अयोध्या में स्थापित ट्रेनिंग सेंटर पर वृक्षारोपण करते हुये पीसीयू सभापति सुरेश गंगवार एवं संचालक रामहेत व अन्य अधिकारी एवं कर्मचारीगण

वन महोत्सव 2024 'पेड़ लगाओ-पेड़ बचाओ' अभियान के अन्तर्गत काशी में स्थापित ट्रेनिंग सेंटर पर पीसीयू के प्रबन्ध निदेशक श्रीकान्त गोस्वामी एवं संचालक राम प्रकाश दूबे पौधरोपण करते हुये

महोबा प्रबन्ध प्रशिक्षण केन्द्र परिसर में वृक्षारोपण करते हुये दिनेश तिवारी व अन्य

मेरठ प्रबन्ध प्रशिक्षण केन्द्र परिसर में वृक्षारोपण करते हुये पीसीयू के संचालक विजेन्द्र कुमार एवं संयुक्त निबन्धक संजीव राय

हैवरा-इटावा प्रबन्ध प्रशिक्षण केन्द्र परिसर में वृक्षारोपण करते हुये संचालक प्रदीप भाटी एवं अन्य

बिलारी-मुरादाबाद प्रबन्ध प्रशिक्षण केन्द्र परिसर में वृक्षारोपण करते हुये संचालिका श्रीमती सुमन रानी

केन्द्र पर यूनियन के संचालक प्रदीप भाटी एवं वहां के मौजूद कर्मचारियों ने वृक्षारोपण में बढ़चढ़ कर हिस्सा लिया।

बिलारी-मुरादाबाद में पीसीयू की संचालिका श्रीमती सुमन रानी ने वृक्षारोपण किया। वहीं मेरठ प्रशिक्षण केन्द्र पर पीसीयू के संचालक विजेन्द्र कुमार एवं संयुक्त निबन्धक संजीव राय तथा ट्रेनिंग सेन्टर पर कार्यरत कर्मचारियों व प्रशिक्षार्थियों ने वृहद वृक्षारोपण किया। उक्त अवसर पर यू0पी0 कोआपरेटिव यूनियन द्वारा प्रदेश में अपने समस्त ट्रेनिंग सेन्टरों पर लक्ष्य से अधिक वृक्षारोपण किया गया। ❑

यहि पाखे पतिव्रत ताखे धरो

डॉ0 ओ.पी. मिश्र,
डी.लिट (अर्थशास्त्र)
विद्या भूषण सम्मान–2014
अवन्तीबाई साहित्य सम्मान–2021
अखिल भारतीय साहित्य परिषद प्राप्त सम्मान–2023

भारत में तीन ऋतुएं - जाड़ा, गर्मी और बरसात प्रमुख हैं। ऋतुओं की विभिन्नता के फलस्वरूप देश में अनेक प्रकार की फसलें, फल-फूल और औषधीय पौधे पैदा होते हैं। जाड़ा अमीरों को छोड़कर शेष को कपकपाता है। गर्मी जब 32 डिग्री सेल्सियस से बढ़कर 45 डिग्री सेल्सियस तक पहुँच जाती है तब विश्व तपोवन बन जाता है। प्रत्येक वर्ष 20 जून तक उत्तर भारत में मानसून दस्तक देता है। बादल आसमान पर घमा चौकड़ी करते हैं। हम कभी बादलों में अनेक चित्र देखते हैं। कभी हाथी, कभी घोड़े, कभी हिरन की आकृतियाँ हमें मोह लेती हैं। लगता है बादल कैनवस हैं और उस पर इंद्र ने नाना प्रकार के चिन्ह बनाए हैं।

वर्षा ऋतु किसानों के लिए बहुत उपयोगी होती है। धान, ज्वार, बाजरा, मक्का, गन्ना आदि के पौधे तेजी से बढ़ते हैं। उनकी बढ़त और हरियाली देखकर किसान के हृदय में हर्ष की हिलोरें उठती रहती हैं। उक्त फसलें किसानों के भाग्य को ही नहीं जगाती हैं अपितु सम्पूर्ण देश की आर्थिक शक्ति को और मजबूत करती हैं। भूमि में पड़ा बीज अपनी हस्ती को मिटाकर अंकुरित होता है, पौधा बनता है। हमें इससे प्रेरणा लेनी चाहिए।

शायर कहता है-

मिटा दो अपनी हस्ती को अगर कुछ मर्तबा चाहो।
कि दाना खाक में मिलकर गुले गुलजार होता है।।

वर्षा से प्रति एकड़ उत्पादन बढ़ता है। इसके फलस्वरूप कृषक समृद्ध होते हैं। कभी प्रकृति वादियों ने कहा था ''निर्धन किसान, निर्धन राज्य'' आज भी यह उक्ति सच है। भारत जैसे खेतिहर देश में और भी अधिक सच है।

वर्षा से सम्पूर्ण समाज लाभान्वित होता है। इसके अभाव में अकाल पड़ता है। लाखों काल के गाल में चले जाते हैं। वर्षा से कृषि उत्पादन बढ़ता है। देशवासियों की क्षुधा शांत होती है, अन्न के निर्यात से विदेशी विनिमय मिलता है, उद्योगों को कच्चा माल मिलता है। समाज सुखी और समृद्ध होता है।

साहित्यकारों विशेषकर कवियों के लिए वर्षा बहुत कुछ रचने को प्रेरित करती है। वर्षा काल में चातक अपनी आवाज करते हैं, कोयलें कूकती हैं और मोर (मोरनी नहीं) नाचते हैं। महाकवि देव (इटावा निवासी) का निम्नलिखित छंद कुछ ऐसा ही है-

सुनि कै धुनि चातक मोरन की
चाहुँ ओरन कोकिल कूकन सो।
अनुराग भरे बन बागन में,
हरि गावत राग अचूकन सो।

कवि 'देव' घटा उनई जु नई, वन भूमि भई दल दूकन सो।

रंगराती हरी लहराती लता झुकि जाती समीर के झूकन सो।।

सावन में पेड़ों पर झूले पड़ जाते हैं। वृक्ष हरे हैं, सुदरियां धानी साड़ी पहन कर पैंग बढ़ाती हैं। प्रकृति और मानव की छटा देखते ही बनती है। कवि युवतियों से कहता है-

यह सावन शोक नसावन है
मन भावन या में न लाजे करो।
अलि झूलो झुलाओ झुको उझको
यहि पाखै पतिव्रत ताखे धरो।।

महाकवि 'सेनापति' ने निम्नलिखित छंद में अनूठी कल्पनाएं की हैं-

'सेनापति' उनये नये जलद सावन के,
चरिहू दिसान घुमड़त भरे तोय के।
सोभा सरसाने न बखाने जात के हूँ भाँति,
आने हैं पहाड़ मानो काजर के ढोय के।
घन सो गगन छयो, तिमिर सघन भयो,
छेखि न परत मानो रवि गयो खोय के।
चार मास भरि भोर निसा को भरम मानि,
मेरे जानि याही ते रहत हरि सोय के।।

कवि ने गोपी और कृष्ण के मिलन की बड़ी दूर की बात कही है-

अलि हौं तो गई जमुना जल को
सो कहा कहौं घोर विपत्ति परी,
घहराय के काली घटा उनई,
इतने में ही गागर सीस धरी।
रपट्यो पग घाट चढ़ेयो न गयो,
कवि 'मंडन' ह्वौ के बिहाल गिरी।
चिर जीवहु नन्द को छोरो अली
गहि बॉह गरीब की ठाढ़ी करी।।

आधुनिक कवि नागार्जुन की कविता है-

नेघ बजे,
धिन धिन धा धमक धमक, मेघ बजे।
दामिनि यह गई दमकि मेघ बजे।
दादुर का कंठ खुला, मेघ बजे।
धरती का हृदय धुला, मेघ बजे।
पंक बना हरि चंदन मेघ बजे।
हल्का है अभिनन्दन मेघ बजे।
धिन धिन धा धमक धमक, मेघ बजे।

आजादी तथा नई आर्थिक नीति अपनाने के बाद हमारे समाज में परिवर्तन हुए हैं और हो रहे हैं। अब कृषि पिछड़ गई है और किसान विपन्न हैं वर्षा अनिश्चित है। बादलों पर कविता अब कौन करे जब इसके लिए नेता मौजूद हैं। चालीसा लिखने में जो लाभ है वह बादल, कोकिल, चातक और मोर वर लिखने पर कहाँ। झूले गायब हैं। यदि हैं तो गाँव की युवतियाँ झूलने से भय खाती हैं। पता नहीं कब कोई मन चला आकर उन्हें छेड़ दे। व्यक्ति वाद, आत्ममुग्धता एवं आधुनिकता के नाम पर सब संभव है। ❑

पता : 610/368 जी,
केशवनगर, सीतापुर रोड,
लखनऊ-226020
मो0 : 9559419018

पानी! बरसे न...

उमेश प्रकाश 'उमेश'
(विद्यावाचस्पति)

उमड़ घुमड़ कर छाये बदरिया, पानी ! बरसे न।
प्यासा मन तरसाये बदरिया, पानी ! बरसे न।।

सूख रहे हैं खेत बाग-बन, दहक रहे हैं घर-आंगन।
पशु-पक्षी सब व्याकुल फिरते, जियरा ! हरसे न।।

उमस से हैं सब बिल्लाते, गर्मी-गर्मी हैं चिल्लाते।
सारा दिन बस बहे पसीना, जीवन ! सरसे न।।

जलती सड़कें आग उगलती,
चहुंदिस जलती धूप मचलती।
बन विभाग ने पेड़ भी काटे, छाया ! दरसे न।।

सड़क किनारे नल और पानी,
अब तो हो गई बात पुरानी।
बूंद-बूंद पानी को हरदम, राही ! तरसे न।।

गला सूखता प्यास के मारे, हर कोई भगवान पुकारे।
काम काज सब छोड़ जरूरी, निकले ! घर से न।।

पंखा-कूलर फेल हो गए, घर भी अब तो जेल हो गये।
एवसीव की है नहीं व्यवस्था, लक्ष्मी दरसे न।।

है ! ईश्वर अब तेरा आसरा, रास्ता सूझे नहीं दूसरा।
अब तो अपनी कृपा दिखा दो, बादल ! बरसे न।।

❑❑❑

पता :
एफ-2136 राजाजी पुरम
लखनऊ-226017
मो - 9616135039

आरोग्य : "सेहत पर जागरूकता अभियान"

पूजा गुप्ता

वर्तमान में बढ़ती जा रही कई तरह की बीमारियां, तनाव और डिप्रेशन, स्वस्थ और सेहतमंद जीवनशैली को बेहद प्रभावित करता है। इसका प्रभाव न केवल आपके मन व मस्तिष्क पर नकारात्मक रूप से पड़ता है, बल्कि यह आपको शारीरिक रूप से भी कमजोर कर देता है। इतना ही नहीं कैंसर, टीबी, अपेंडिक्स, लीवर में पस होना, गैस व एसीडिटी, कई तरह के संक्रमण की समस्या दिन पर दिन की बढ़ रही है। अच्छी सेहत की बात सभी करते हैं और इसके प्रति काफी हद तक जागरूकता आई भी है। फिर भी कई मामले ऐसे आते हैं जो सोचने पर विवश कर देते हैं। यह कि क्या यही चिकित्सा जगत की उपलब्धि है? रोग का या तो समय पर पता नहीं चल पाना या उसका सही तरह से उपचार नहीं होना कई लोगों को आज भी असमय काल का ग्रास बना रहा है। ज़िन्दगी तेजी से बदल रही है, हर कोई अपने काम में व्यस्त है. इस भागती दौड़ती ज़िन्दगी में हम अपने स्वास्थ्य पर ध्यान नहीं दे पा रहे हैं। हालाँकि आज कई लोग स्वास्थ्य के प्रति जागरूक हैं। पर हमारे देश में अधिकतर लोग अपने स्वास्थ्य के प्रति उतने सजग नहीं हुए है जितना की पश्चिमी देश के लोग है। सफलता पाने के लिए स्वस्थ शरीर का होना बहुत ज़रूरी है। ज़िन्दगी में अगर आप कितना पैसा भी कमा ले पर आपने अपने स्वस्थ पर ध्यान नहीं दिया तो सफलता के कोई मायने नहीं रह जायेगे। आपका सारा पैसा आपकी बिमारियों पर खर्च होगा। अपने स्वास्थ्य का ध्यान कैसे रख सकते हैं कुछ दिनचर्या परिवर्तन करे जैसे अच्छे स्वास्थ्य के लिए सबसे आवश्यक है नियमित व्यायाम या योग। कुछ समय स्वयं के लिए निकालकर सुबह घूमने अवश्य जाइए। आधी समस्याएं दूर होंगी। तनाव लेना छोड़ें। छोटी-छोटी बातों के तनाव फिर वो नौकरी की समस्या हो या आर्थिक, शारीरिक सबका हल है। तनाव लेने से समस्या दूर नहीं होगी, उसका समाधान ढूंढ़ उससे निपटने में अपनी ऊर्जा लगाएं। कोई बीमारी पता लगने पर तनाव लेने की बजाय नियमित दवाई लें, डाक्टर के निर्देशों का पालन करें व परहेज पालें। मन को मजबूत बनाएं व बीमारी को हावी न होने दें। हर उम्र की अपनी समस्याएं होती हैं। 40 वर्ष पश्चात् नियमित जांच प्रतिवर्ष अवश्य करवाएं ताकि बीमारी को प्रारंभिक अवस्था में ही जाना जा सके। सब कुछ ठीक होने पर भी स्वास्थ्य गड़बड़ाए तो परेशान, निराश, उदास हो उसी के बारे में सतत सोचने से अच्छा है कि उसे जीवन का एक पड़ाव व हिस्सा मान सहजता से स्वीकारें। दिल को हमेशा सकारात्मक सोच व ऊर्जा व प्रसन्नता से भरा रखें तभी पूर्ण शरीर स्वस्थ रहेगा व दिमाग में व्यर्थ के नकारात्मक विचारों को न आने दें। अपनों के संपर्क में रहना चाहिए और अपने मन के भावों को विश्वसनीय व्यक्तियों के साथ साझा करना चाहिए। नशीले पदार्थों का इस्तेमाल या सेवन बिल्कुल भी नहीं करना चाहिए। इससे हमारे शरीर के पार्ट्स डैमेज हो जाते हैं। इससे यकृत, अमाशय, फेफड़े इत्यादि खराब हो जाते हैं। खाने में पौष्टिक भोजन, दूध, दही, सलाद, फल, अनाज, हरी सब्जियों आदि का प्रयोग करना चाहिए। हमेशा सब्जियों को धोकर प्रयोग में लाना चाहिए। फर्श की सफाई फिनायल आदि डालकर करनी चाहिए। टायलेट और बाथरूम को हमेशा साफ रखना चाहिए। यहां से इंफेक्शन का खतरा अधिक होता है। वातावरण में विभिन्न प्रकार के वायरस पनप रहे हैं जिनसे हमें खुद को बचाना चाहिए। ये जानलेवा साबित हो रहे हैं। हमें अपने आप को और अपने आसपास के लोगों को भी सुरक्षित रहने के उपायों को बताना चाहिए। लोगों को स्वच्छता के प्रति जागरूक करना चाहिए। ❑

भगवानदास की गली,
आदर्श स्कूल के सामने,
गणेश गंज,
मिर्जापुर (उत्तर प्रदेश)।
मो0 - 7007224126
पिन कोड - 231001

अंतरराष्ट्रीय युवा दिवस के संदर्भ में युवा विमर्श

- गौरी शंकर वैश्य विनम्र
पूर्व सीनियर पोस्ट मास्टर,
डाक विभाग

यूनेस्को की महासचिव इरिना वोकोवा ने कहा था-'' युवा लोग न केवल हमारा भविष्य हैं - वे हमारा वर्तमान हैं, वे दुनिया की सबसे अधिक जुड़ी हुई, सबसे मुखर और सबसे खुले विचारों वाली पीढ़ी है''।

अंतरराष्ट्रीय युवा दिवस मनाने का आयोजन 12 अगस्त को पहली बार वर्ष 2000 में आरंभ किया गया। इसमें युवा मुद्दों को अंतर्राष्ट्रीय समुदाय के ध्यान में लाया गया। इसका संदेश यही था कि आज के वैश्विक समाज में भागीदार के रूप में युवाओं की क्षमता का उत्सव मनाया जा सके।

यह दिवस युवाओं की आवश्यकताओं, कार्यों और प्राथमिकताओं को मुख्य धारा में लाने के साथ-साथ उनके सार्थक, सार्वभौमिक और न्यायसंगत जुड़ाव का अवसर देता है। संयुक्त राष्ट्र महासभा ने 17 दिसंबर 1999 को इस दिवस की स्थापना की, जिसमें युवाओं के लिए उत्तरदायी मंत्रियों के विश्व सम्मेलन द्वारा की गई संस्तुतियों का समर्थन किया गया। वहाँ 12 अगस्त को अंतरराष्ट्रीय युवा दिवस घोषित करने का आह्वान किया गया। संयुक्त राष्ट्र संघ के निर्णय के अनुसार सन 1985 को अंतरराष्ट्रीय युवा वर्ष घोषित किया गया था।

राष्ट्र निर्माण में युवा शक्ति की भागीदारी

युवाओं के प्रेरणास्रोत रहे स्वामी विवेकानंद का यह कथन कि '' मुझे कुछ साहसी और ऊर्जावान युवा पुरूष मिल जाएँ, तो मैं देश में क्रांति ला सकता हूँ '', राष्ट्र निर्माण में युवा शक्ति की भागीदारी को दर्शाता है। युवावस्था वह समय होता है, जब नवोन्मेषी और रचनात्मक विचार मन में आते हैं। राष्ट्र की नीतियों. योजनाओं और विकास कार्यों को युवाओं द्वारा सर्वोत्तम रूप से लागू किया जा सकता है।

पूरे विश्व में भारत को युवाओं का देश कहा जाता है। यहाँ 35 वर्ष आयु के 65 करोड़ युवा हैं, अर्थात हमारे देश में अथाह श्रम शक्ति उपलब्ध है।

आवश्यकता है-हमारे देश की युवा शक्ति को उचित मार्गदर्शन की, जिससे वे देश की उन्नति में भागीदार बन सकें।

युवा वर्ग की समस्याएँ

आज इस सच्चाई से कोई मुँह नहीं मोड़ सकता कि स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद देश के युवाओं को सही दिशा नहीं मिल रही है और उनमें भारी असंतोष व्याप्त है। अतः देश के कर्णधारों द्वारा उनकी समस्याओं का समुचित निदान करना अति आवश्यक है।

युवाओं के मुद्दों का समाधान अपेक्षित

किसी भी देश का युवा उस देश के विकास का सशक्त आधार होता है। लेकिन जब यही युवा अपने सामाजिक और राजनीतिक जिम्मेदारियों को भूलकर विलासिता के कार्यों में अपना समय नष्ट करता है, तब देश बर्बादी की ओर अग्रसर होने लगता है। स्कूल-कालेजों से शिक्षा प्राप्ति के बाद भी यहाँ के छात्र-छात्राओं का भविष्य अंधकारमय है। न तो उन्हें नौकरी मिल पाती है और न ही उनका पुस्तकीय ज्ञान अन्य कार्यों में उपयोगी सिद्ध हो पाता है। वे गरीबी, बेरोजगारी, भ्रष्टाचार आदि समस्याओं के जाल में फँसते चले जाते हैं। कई बार प्रतिभाशाली छात्र भी आरक्षण और सरकार की अन्य अव्यावहारिक नीतियों का शिकार हो जाते हैं।

न हो प्रतिभा पलायन

आज विश्व भर में युवा विलासिता और सुख -सुविधाएं देखते हुए अपने देश की जमीन को छोड़कर दूसरी जगह जा रहे हैं, जिससे राष्ट्र निर्माण में व्यवधान आ रहे हैं। युवा किसी भी राष्ट्र की शक्ति होते हैं, विशेषकर भारत जैसे महान राष्ट्र की ऊर्जा तो युवाओं में ही निहित है, ऐसे में यदि युवाओं का भारी प्रवासन होता है, तो उससे न केवल उस राष्ट्र की अक्षमता प्रदर्शित होती है, अपितु देश के विकास का सशक्त आधार भी समाप्त हो जाता है।

युवा शक्ति को चाहिए सुसंस्कार और सद्चरित्र : आज हमारे देश की युवा शक्ति को अच्छे संस्कार और उचित दिशा देने एवं प्रौद्योगिक विशेषज्ञ बनाने की आवश्यकता है। उन्हें बुरी आदतों जैसे नशा, जुआँ, मदिरा, हिंसा, मादक द्रव्य, मोबाइल लत इत्यादि से बचाने की आवश्यकता है।

चरित्र निर्माण ही देश एवं समाज की उन्नति के लिए परमावश्यक है। देश को विश्व के विकसित राष्ट्रों की पंक्ति में खड़ा करने के लिए युवा वर्ग को मेधावी, सुसंस्कृत, सचरित्र, श्रमशील, देशभक्त और समाज सेवा से ओतप्रोत होना चाहिए।

युवा वर्ग को अपने विद्यार्थी जीवन में अध्ययनशील, संयमी तथा अनुशासित बनकर अपने भविष्य को उज्ज्वल बनाने में जुट जाना चाहिए।

युवाओं को दी जाए रोजगारपरक शिक्षा

वर्तमान में प्राथमिक शिक्षा, कुछ निजी स्कूलों को छोड़कर, बच्चों में शिक्षा के प्रति अरूचि पैदा कर रही है। शिक्षा में गुणवत्ता के अभाव में विद्यार्थी केवल परीक्षा उत्तीर्ण कर लेते हैं, किंतु वे मेधावी एवं योग्य नही बन पाते। फलतः 90 प्रतिशत बच्चे हाई स्कूल की शिक्षा प्राप्त कर आगे शिक्षा से मुँह मोड़ लेते हैं या कुछ बेमन से मात्र डिग्री प्राप्त करने के लिए आगे पढ़ते हैं।

वर्तमान समय में विद्यार्थियों को रोजगारपरक शिक्षा पर ध्यान देना चाहिए। उन्हें प्रौद्योगिकी और तकनीकी से संबंधित विषयों में विशेषज्ञता प्राप्त करनी चाहिए, जिसमें रोजगार की अपार संभावनाएं दिखती हैं। भारत की शिक्षा युवाओं के जीवन को सँवारने में सहयोगी बने।

अंतरराष्ट्रीय युवा दिवस पर युवाओं के लिए आयोजित की जाएँ कतिपय गतिविधियाँ

अंतरराष्ट्रीय युवा दिवस को सफल बनाने के लिए निम्नलिखित गतिविधियाँ आयोजित करके युवा समुदाय में सार्थक संदेश को प्रभावी ढंग से फैला सकते हैं। संदेश फैलाने के लिए अपने सभी चैनलों का प्रयोग करें। फेसबुक, ट्विटर, यूट्यूब, विश्वविद्यालय के समाचार पत्र, स्थानीय समाचार पत्रों को प्रयोग किया जाए।

- शैक्षिक रेडियो शो, प्रतिष्ठित व्यक्तियों और

युवाओं के साथ चर्चा करें। लोकप्रिय स्थानीय एवं राष्ट्रीय रेडियो स्टेशनों से संपर्क करें।

❑ शैक्षिक मुद्दों पर युवाओं के योगदान पर चर्चा करने के लिए एक आभासी सार्वजनिक बैठक या बहस का आयोजन करें।

❑ अंतर-पीढ़ीगत (जनरेशन गैप) समझ को बढ़ावा देने के लिए वयस्कों और युवाओं के बीच चर्चाएं आरंभ की जाएँ।

❑ विचारों के आदान - प्रदान और सांस्कृतिक पृष्ठभूमि पर संवाद करने के लिए एक युवा मंच-आयोजन करें। जिसमें युवाओं को दूसरों को स्वीकार करने में मदद मिल सके।

❑ अहिंसा की संस्कृति को लोकप्रिय बनाया जाए।

❑ युवा दिवस को बढ़ावा देने के लिए एक (आभासी) संगीत कार्यक्रम का आयोजन करें जिसमें स्थानीय संगीतकारों को आमंत्रित करें और इसे एक पेनल के साथ जोड़ें या किसी राजनेता या नीति निर्माता को मुख्य भाषण देने के लिए आमंत्रित करें।

❑ शहर या गाँव के केंद्र में उच्चतर स्कूलों. महाविद्यालयों या विश्वविद्यालय केंद्रों में युवाओं से संबंधित मुद्दों के बारे में एक सूचना केंद्र बनाएँ।

❑ एक कला प्रदर्शनी के लिए सार्वजनिक स्थान का उपयोग करने की अनुमति प्राप्त करें, जिसमें आज के युवाओं की चुनौतियों या युवा लोक विकास में कैसे योगदान दे रहे हैं, की विषय-वस्तु प्रदर्शित की जाए।

❑ युवाओं से संबंधित मुद्दों पर जागरूकता बढ़ाने के लिए संस्कृति , कला आदि क्षेत्रों में युवाओं को सम्मिलित करने का प्रयास किया जाए।

आज भारत के युवाओं को 'अब्दुल कलाम' की इन पंक्तियों से प्रेरणा लेने की आवश्यकता है - ''आकाश की ओर देखो। हम अकेले नहीं हैं। सारा ब्रह्मांड हमारे लिए अनुकूल है और जो सपने देखते हैं और मेहनत करते हैं, उन्हें वह उनका हक प्रदान करता है''।

स्वामी विवेकानंद ने युवा शक्ति का आह्वान करते हुए कहा था -''समस्त शक्तियाँ तुम्हारे अंदर हैं। तुम कुछ भी कर सकते हो और सबकुछ कर सकते हो, यह विश्वास करो। मत विश्वास करो कि तुम दुर्बल हो ''। आज भारत के युवाओं को विवेकानंद के विचारों से सीख लेकर, उन्हीं के बताए मार्ग पर चलने की आवश्यकता है, तभी वे बेहतर भारत का निर्माण कर सकते हैं। अंतरराष्ट्रीय युवा दिवस युवाओं को सही दिशा देकर उनके जीवन-निर्माण को संबल प्रदान करता है।

-गौरीशंकर वैश्य विनम्र
117 आदिलनगर, विकासनगर
लखनऊ 226022
दूरभाष 09956087585

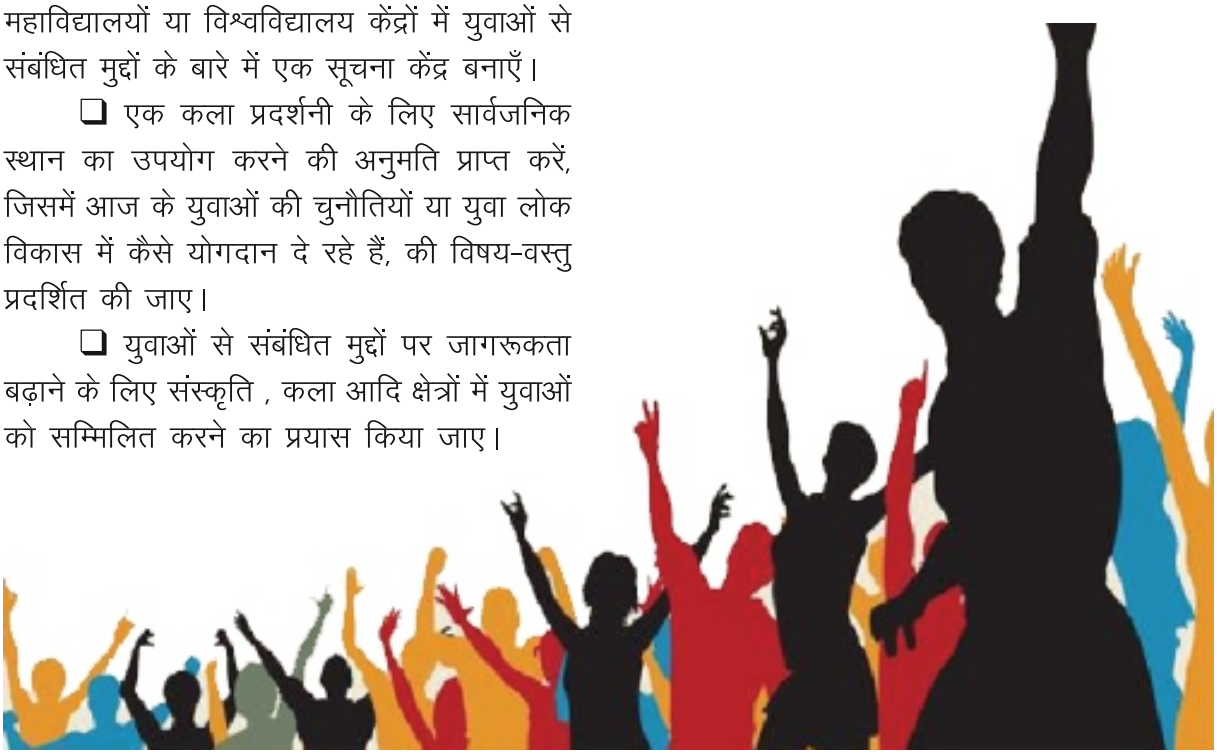

मातृशक्ति और उसका त्याग

- महेश कुमार केशरी

बिलासी काम पर जाने को लगभग तैयार था। उसने चेक किया पानी की बोतल और टॉर्च ले लिया। उसने रोटियों वाले डब्बे में हाथ डाला। वो खाली था। वो रोटियाँ ढूँढ़ रहा था। लेकिन उसमें एक रोटी ही बची थी स उसने घड़ी पर नजर दौड़ाई। घड़ी दस बजा रही थी। उसकी माँ अब घर लौटेगी। उसकी दोपहर दो से दस की शिफ्ट चलती है। सहसा उसे अपनी पत्नी रज्जो की याद आई। वो तो मायके गयी हुई है गर्मियों की छुट्टियों में बच्चों के साथ। कल लौट आयेगी। स्कूल जो खुलने वाले हैं। बिलासी को बहुत तेज भूख लगी थी, क्या करे? खा ले वो रोटी। लेकिन माँ भी तो दोपहर से काम पर गई है। बेचारी बूढ़ी अम्मा। उसे भी तो भूख लगी होगी। माँ को भूखा रखकर भला वो कैसे खा सकता है? उसे उसकी आत्मा धिक्कारेगी नहीं ! अब माँ तो बस हड्डियों का ढाँचा भर रह गई है। गिरती पड़ती बहुत मुश्किल से चल पाती है। पिछले महीने बीमार थी। वो तो सुई दवाई और गाय के दूध का कमाल है कि अभी दौड़ भाग कर ले रही है। नहीं तो उसमें चलने की भी हिम्मत कहाँ थी। वो इतना निर्दयी थोड़े ही है कि माँ कि रोटी खा जायेगा। भले ही वो भूखा है, तो क्या?

अब इतना ही कम है, क्या कि इस उम्र में भी वो काम कर रही है। अब उसकी अकेले की सैलरी से तो घर नहीं चलता। चिंतामणि भी वहीं काम करती है स जहाँ बिलासी काम करता है। उसने कुछ ठोस सोचा और रोटी को डब्बे में वापस रख दिया। पानी की बोतल और टॉर्च लेकर वो काम पर निकल गया।

रात सवा दस बजे चिंतामणि घर पहुँची। दिन भर काम करके थकान हो गयी थी। थोड़ी देर सुस्ताने के बाद। वो दिन भर के जूठे बर्तन धोने के लिये निकालने लगी। जब बर्तन धुल गये। तो अँगीठी पर चाय का पानी चढ़ा दिया। चाय उबलने लगी। आज कारखाने से लौटते समय शँभू का बेटा मिल गया था। उसने थोड़ी खीर चिंतामणि को दी थी। चाय पीते हुए बुढ़िया ने सोचा। खीर तो मिल ही ग ई है। उसे अब भूख भी लग आई है। क्यों ना थोड़ा सा आटा गूँथकर दो रोटी चटपट बना ले। लेकिन हत् भाग्य। उसने कनस्तर खोला तो वो खाली था। ये आटे का कनस्तर था। हे भगवान् ये लड़का भी ना निपट उल्लू है। इसको दोपहर को जाते ही कहा था। बेटा कुछ करो ना करो लेकिन मोहन पंसारी के यहाँ से आटा लेते आना। लेकिन ये लड़का भी ना। नाच नौटंकी, गाने बजाने और बैठकबाजी में सारा समय निकाल देता है। एक बात नहीं सुनता मेरी। इतना लापरवाह भी भला कोई होता है। ओह ! लगता है भूखा ही चला गया है। नहीं मैनें एक रोटी छोड़ दी थी, रोटी वाले डब्बे में। शायद खा लिया हो। हे भोले नाथ इसको जरा सद्बुद्धि दीजिये। माँ का दिल बेटे के ममत्व से पिघला जा रहा था। डब्बा खोला तो देखा, रोटी ज्यों-की-त्यों वैसे ही डब्बे में रखी है। ओह ! कैसा लड़का है। जब उसे आटा लाना याद नहीं रहा होगा। तब उसे अफसोस हुआ होगा। सोचा होगा माँ भी तो भूखी होगी। कितना ख्याल करता है मेरा। बेकार ही उसको भला-बुरा कहा। माँ की आँखों से आँसू झरने लगे। भला कोई इतना भी प्रेम करता है, माँ से ! पगला है रे बिलासी, तू पगला है। बुढ़िया

ने खीर तो खा लिया। लेकिन रोटी जैसे के तैसे रख दिया। सोचा सुबह छः बजे जब बिलासी लौटेगा तो खा लेगा। आखिर अभी उम्र ही भला कितनी है। पच्चीस साल इस बार लगा है। लेकिन दिखता पैंतीस का है। बाप के मरने के बाद से घर की सारी जिम्मेदारी उसने उठा ली है। बेचारा खाता भी भला क्या है? दो रोटी सुबह, दो रोटी शाम। दूध घी तो देखे उस जमाना हो गया। बुढ़िया ने लैंप बुझायी और सो गई।

सुबह पाँच बजे ही रज्जो ऑटो से आ गई। बुढ़िया ने उठकर दरवाजा खोला। रज्जो ने पहले सारा घर साफ किया। फिर इधर-उधर बिखरे सामान को सलीके से रखा। बच्चे सफर से होकर थके आये थें। क्वॉर्टर में पँखे के ठंड़े हवा के नीचे उनको तुरंत नींद आ गई। रज्जो को जो सफर से लौट आई थी। उसे भूख लग आई थी। ट्रेन और बस में उसे उल्टी होने लगती है। वो वैसे भी बाहर का खाना नहीं खाती। सोचा घर जाकर ही खाऊँगी। अपने हाथ से अपने घर का बना। उसने कनस्तर खोला। लेकिन उसमें आटा नदारद था। चिंतामणि से पूछा तो चिंतामणि ने कल की घटना दुहरा दी। रज्जो को भी बिलासी के लापरवाह होने पर बहुत गुस्सा आया। सस्पेन में चाय बिठा दी। रोटी वाला डब्बा खोला तो उसमें वही पिछले दिन वाली एक रोटी बची थी। तभी दरवाजे पर बिलासी ने आवाज लगाई-'अम्मा दरवाजा खोलो।'

रज्जो ने आगे बढ़कर दरवाजा खोला।

'अरे, तू कब आई।'

पानी की बोतल और टॉर्च को अपनी जगह पर रखते हुए बिलासी बोला।

'अभी रात वाली गाड़ी से।'

'तू टेशन लेने नहीं आया।'

'अरे आज रात की पाली थी।'

'रहने दो , रहने दो स बहाना मत बनाओ। तुम कभी मुझे लेने नहीं आते। काम का तो केवल बहाना है। बच्चे ना जने होते तो मुझसे मतलब भी ना रखते।'

'धत् ऐसा क्यों कहती है, पगली!'

'तू तो मेरी रानी है, रानी स रानी बेकार ही कह रहा हूँ। तू तो महारानी है। मेरे घर की लक्ष्मी है।'

'चलो, ज्यादा बातें ना बनाओ। बातें बनाने में बहुत ओस्ताद हो।'

'नहीं रे तू ऐसा क्यों कहती है। दुनिया की बात और है लेकिन मैं तेरे सामने बातें नहीं बनाता। अगर बातें बनाता हूँ, तो मेरा मरा मुँह देखेगी।'

'धत् , सुबह-सुबह अशुभ-अशुभ बातें काहे बोलते हो। तुमको कुछ हो गया तो ई छौआ जने का और हमरा का होगा। दुनिया बहुत मतलबी है बात भी ना पूछेगी।'

'धत् अभी मैं मरा थोड़े ही जाता हूँ।'

'मरे तोरा दुश्मन।'

'लापरवाह तो हो तुम।'

'मैं, नहीं मनता।'

'फिर, कल आटा काहे नहीं लाये?'

'क्यों क्या हुआ ..?'

'अम्मा बता रहीं थीं। तुमको कल दिन में ही आटा लाने को बोलन रहीं।'

'अरे कल महीना का आखिर, दिन रहा। पैसा खत्म हो गया रहा रज्जो।'

'अम्मा ने खाना खाया था, कल रात।'

'नहीं वो रोटी जो तुमने अम्मा के वास्ते रखी थी। अम्मा ने तुम्हारे लिये रख छोड़ा है। चाय बना दी है रोटी खा लो सजो डब्बे में बची रही है। ले आऊँ।'

'हाँ ..'

आज बिलासी को माँ की हैसियत पता चली थी। त्याग करने वाली माँ की। माँ को हम ऐसे ही माँ नहीं कहते। सचमुच वो अपने हिस्से का भी सब कुछ अपनी औलादों पर न्योछावर कर देती है। ऐसे ही इस दुनिया में माँ को लोग नहीं पूजते। ऐसे ही लोगों की श्रद्धा माँ पर नहीं बनी हुई है !

'तू भी तो अभी सफर से लौटी है। मैं अच्छी तरह से जानता हूँ। तू बाहर बस और ट्रेन में कुछ नहीं खाती। और तुझे तो गाड़ी में उल्टी भी आती है।

'मैनें बस में पावरोटी खाई थी। अभी भूख बिल्कुल भी नहीं है।'

'सच।'

'हाँ, सच तो बोल रही हूँ।'

'खा, मेरी सौगंध।'

'धत् इतनी छोटी बात पर भी भला कोई सौगंध खाता है?'

'ले, आधी रोटी खा ले।'

'नहीं सच में भूख नहीं है।'

लेकिन, रज्जो की हालत तो ऐसी थी कि आधी क्या अभी चार-पाँच रोटियाँ भी मिलती। तो वो वो सड़ाक से खा जाती।

'अच्छा, सुन तू सफर से लौटी है। तेरे पास कुछ पैसे हैं।'

'काहे के लिये।'

'दे ना कुछ काम है।'

'बता तब दूँगी।'

'घर के लिये आटा और तरकारी लानी है।'

'मेरे पास केवल आटे भर का ही सौ रूपये बचा है। वो भी जब अपने और बच्चों का बहुत मुँह दाब के चली हूँ, तब।'

'आँय।'

'तब क्या?

रज्जो ने आँचल में बँधे सौ के उस आखिरी नोट को निकाला और बिलासी के हाथ पर धर दिया।

औरत का एक रूप त्याग का तो बिलासी ने देख लिया था। लेकिन, खुद भूखे रहकर रज्जो ने जो रोटी, बिलासी को खिलायी थी। वो बिलासी ने भी कहाँ देखा। ये थी मातृ शक्ति और उसका त्याग! आखिर रज्जो भी तो एक माँ थी, एक पत्नी थी।

पता : C/o -मेघदूत मार्केट फुसरो
बोकारो झारखंड
पिन -829144
email : keshrimahesh322@gmail-com

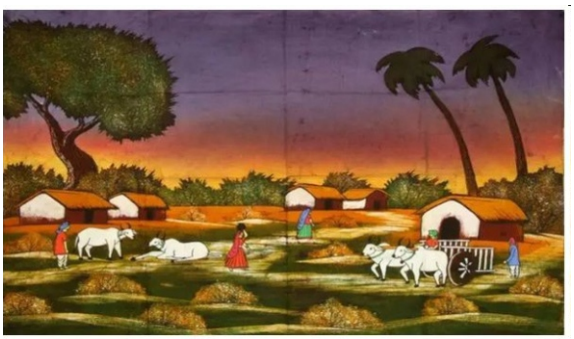

गांव की भोर

- मुकेश कुमार ऋषि वर्मा

बड़ी सुहानी गांव की भोर।
मुर्गा बोले
जन आंखें खोलें
बापू चले खेत की ओर।
बड़ी सुहानी गांव की भोर।।
मंदिर में घंटी बाजे,
गोपाल की मूरत सजे,
छत पर नाचे मोर।
बड़ी सुहानी गांव की भोर।।
चाची आंगन बुहारे,
आसमान से गुम हुए सितारे,
गुड़िया देती तुलसी को जल धार,
बड़ी सुहानी गांव की भोर।।
दादी गाती सुर से मंत्र
दादा पढ़ते अखबार में लोकतंत्र
तोता-मैना की जोड़ी सुंदर
बड़ी सुहानी गांव की भोर।।

❑❑❑

पता : ग्राम रिहावली, पोस्ट तारौली
गूजर, फतेहाबाद, आगरा,
उत्तर प्रदेश 283111 सम्पर्क : 9456994678

सौंफ शरीर को बनाता है निरोग

— बद्री प्रसाद वर्मा अनजान

आज सदियों से घरों में सौंफ खाने की परम्परा चली आ रही है। सौंफ पेट को निरोग और गैस मुक्त बनाता है। गर्मी के दिनों में लू लगने पर सौंफ का शबॅत पीने से बहुत लाभ मिलता है। सौंफ और मिश्री को आधा आभा भाग पीस कर उसका चूर्ण बना ले और सुबह लैटिन जाने से पहले दो चम्मच पानी से खा लें इससे आप के पेट में अईठन और मरोड़ पुरी तरह समाप्त हो जाएगी।

भूख को बढ़ाता है सौंफ

गमी के दिनों में अक्सर लोग भोजन कम खाने लगते हैं यूं कहें तो गर्मी के दिनों में लोगों को भूख कम लगती है ऐसे में सौंफ को पानी में भीगो कर उसका रोज सुबह एक गिलास पानी पीने से भूख बढ़ जाती है। और अपचन भी नहीं रहती है। सौंफ का पानी पीने से दिमाग तेज और दुरूस्त रहती है।

सौंफ एक ऐसा चीज है जिसके सेवन से सरीर की इम्यूनिटी को बढ़ता और सरीर का वजन भी कम करता है। इसके सेवन से आदमी तनाव मुक्त रहता है।

सौंफ गुणों की खान है

सौंफ में भरपूर मात्रा में कैल्शियम विटामिन सी आयरन मैग्नीशियम और पोटेशियम पाई जाती है। ऐनेथोल नामक गुण भी इसमें भरपूर पाई जाती है। जो स्तन और यकृत कैंसर रोकने में सहायक होता है। सौंफ को आज अपने मसाला में भी नियमित खा सकते हैं इससे भरपूर लाभ मिलेगा।

सौंफ को पानी में उबालकर उसमें आवश्यकतानुसार मिश्री मिलाकर पीने से भी भरपूर लाभ मिलती है।

सौंफ में आवश्यक तेल भी पाए जाते हैं जो

पाचन रस के स्राव को उत्तेजित करते हैं। सौंप के सेवन से सूजन अपच और कब्ज को कम और पुरी तरह समाप्त करने में सहायक होता है।

सौंफ के सेवन से शरीर में जमे विषाक्त पदाथों को साफ करने में भी मदद करता है। बहुत सारे लोग खाना खाने के बाद भी सोंफ का सेवन करते हैं। होटलों और रेस्टोंरेंटों में अक्सर मेज पर सौंफ रखा दिखाई पड़ जाता है।

रोगाणुरोधी से होता है भरपूर

सौंफ अनेक रोगाणुरोधी गुणों के लिए भी जाना माना जाता है। ओरल संक्रमण सांसों की दुर्गंध और मसूडों की विमारी दूर करने में मदद करता है।

सौंफ के सेवन से मांसपेशियों में होने वाले दर्द गठिया के दर्द में सहायक होता है। सौंफ के सेवन से किसी तरह की साईड डिफेक्ट की समस्या कभी नहीं आती है। सौंफ एक तरह से गुणों की खान है इसका उपयोग जो नहीं करते हैं वो आज से ही शुरू कर दें। ❑

पता : मीनू रेडियो श्रोत क्लब
गल्ला मंडी गोला बाजार 273408
गोरखपुर उ. प्र.
मोबाइल नंबर 9838911836

सावन की कजरी

– बद्री प्रसाद वर्मा अनजान

साजन आए न परदेशवा से
किसे सुनाऊं सावन की कजरी
मन बड़ा बेचौन बा
कैसे मैं गाऊं कजरी।

सखियां बोले हमें टीबोली
मन को न भाए कजरी।

साजन आए नहीं मेरे
खूब सताए कजरी।

सखियां झूला झूलत बांटी
रास न आवे कजरी ।
दिल में दर्द उठे इतना
खूब तड़पावे कजरी।

हाथों की मेंहदी माथे की बिंदिया
दिल में हुंक उठावे कजरी।
सावन का यह मस्त महीना जब से आईल बा
बलमा बिन न हमके भावे कजरी।

❑❑

पशुधन पर विशेष ध्यान दे रही सरकार

रामफेर

धरती पर जीव-जीवन के विकास में पशुधन का अमूल्यचूल महत्व है। खास तौर पर भारत में पशुधन मानव जीवन के विकास में अभूतपूर्व सदियों से योगदान रहा है। इस पशुधन का महत्व आज भी उतना ही है, जितना कल था और भविष्य यही आशा है कि कल भी उतना ही महत्व रहेगा। आज यह दोनों एक दूसरे के पूरक बने हुए हैं। समय जरूर बदलता रहता है पर इन दोनों का महत्व वैसे ही हर समय बना रहता है। एक समय था जब पशुधन पर केवल और केवल मानव ही ध्यान देता था। आज समय कुछ बदल गया है। आज पशुधन पर मानव के शिवा सरकार भी बराबर ध्यान दे रही है कि मानव की तरह हमारे जीवन के सहायक पशु-पक्षी किस प्रकार से उनकी उन्नति अधिक हो? कैसे वह स्वस्थ और तन्दुरूस्त हों। किस प्रकार से इनका जीवन भी संरक्षित किया जा सकें। इसके लिए हमारे समाज के साधारण मानव से लेकर वैज्ञानिक और सरकार दिन-रात प्रयासरत हैं। इस वास्ते आज देश भर में नयी-नयी पशु-पक्षियों की औषधियों की खोजों के साथ ही साथ नए-नए अनुसंधान केन्द्र, शिक्षण-प्रक्षिण केन्द्र खोले जा रहे हैं। भारत में पशुधन की कुल आबादी लगभग 53.58 करोड़ है। पशुधन क्षेत्र में वृद्धि की रफ्तार (सीएजीआर) 8.15 फीसदी है। किसान परिवार की औसत मासिक आय में पशुधन का योगदान करीब 15 से 20 फीसद है। कृषि जीडीपी में पशुधन का योगदान करीब 27.65 फीसद है। भारत में पशु स्वास्थ्य का बाजार करीब 67.83 अरब रूपये का है। भारत में आत्मनिर्भरता/स्वरोजगार के लिए पशुधन महत्वपूर्ण साधन के रूप में निखर कर सामने आ रहा है। मानव का जीवन पशुधन पर आज भी उतना ही निर्भर है। जितना कि कल था। प्राकृति ने इसे एक दूसरे का पूरक ऐसे ही नहीं बनाया है। आज भी प्राकृति ही सर्वोपरि है। प्रकृति ही जीव-जीवन है। प्राकृति विकास है। प्रकृति ही विनाश है। इसके शिवा और कुछ नहीं है।

भारत सरकार नई दिल्ली में पशुओं के अच्छे स्वास्थ्य के लिए एम्स जैसे संस्थान स्थापित करने के लिए मसौदा प्रस्ताव तैयार किया है। इसे अखिल भारतीय पशु चिकित्सा विज्ञान संस्थान (एआईआईवीएस) कहा जाएगा, जो पशु चिकित्सा विज्ञान शिक्षा एवं अनुसंधान में राष्ट्रीय महत्व का केन्द्र होगा। इस संस्थान में पशुओं की चिकित्सा के लिए वाह्य और आंतरिक रोगी चिकित्सा सुविधाएं प्रदान करने के लिए 200 से 500 सीटों वाला एक अत्याधुनिक सुपर स्पेशियलिटी अस्पताल भी होगा। मसौदा प्रस्ताव के अुसार इस संस्थान को सबसे उन्नत नैदानिक सुविधाओं से सुसज्जित किया जाएगा। संस्थान में स्नातक पशु चिकित्सकों के लिए शिक्षण-प्रशिक्षण सुविधाएं और स्नातकोत्तर एवं पीएचडी स्कालर के लिए नवाचार एवं अनुसंधान की सुविधाएं भी एक ही छत के नीचे होंगी।

इस संस्थान के लिए राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र में भूमि की तलाश की जा रही है। एआईआईवीएस

का अस्पताल भी एम्स की ही तरह भारत के शीर्ष पशु चिकित्सा अस्पताल के रूप में कार्य करेगा। मसौदा प्रस्ताव में कहा गया है कि इस पशु चिकित्सा अस्पताल में पालतू जानवरों, खेतिहर, मवेशियों, घोड़ों, वन्य जीवों एवं अन्य विदेशी पालतू जानवरों के इलाज के लिए विभाग होंगे। अस्पताल में सर्जरी, ऑप्थल्मोलॉजी, आर्थोपडिक, एनेस्थीसिया, सॉफ्ट-टिशू कलचर, न्यूटर सर्जरी, ऑन्कोलॉजी, कार्डियोलॉजी आदि सभी प्रमुख विभाग अत्याधुनिक सुविधाओं से पूरी तरह लैस होंगे।

एआईआईवीएस नीतिगत अनुसंधान एवं सिफारिश के लिए एक थिंक टैंक के रूप में काम करेगा। साथ ही यह पशुओं की महामारी से निपटने की तैयारी के लिए उत्कृष्टता केन्द्र के रूप में भी कार्य करेगा। अधिकारिक सूत्रों ने कहाकि एम्स की तर्ज पर अखिल भारतीय पशु चिकित्सा विज्ञान संस्थान के लिए भारतीय पशु चिकित्सा परिषद वीसीआई द्वारा प्रस्ताव दिया गया है। मसौदा प्रस्ताव को औपचारिक मंजूरी के लिए केन्द्रीय मंत्री मण्डल के पास भेजा जाएगा। उसके बाद कुल लागत वित्त पोषण एवं अन्य आवश्यकताओं को अंतिम रूप दिया जाएगा। भारतीय पशु चिकित्सा परिषद भारतीय पशु चिकित्सा परिषद अधिनियम-1984 के तहत स्थापित एक सॉविधिक निकाय है। यह मत्स्य पालन, पशुपालन एवं डेरी मंत्रालय की देख-रेख में कार्य करता है।

अगर मंजूरी मिल जाती है तो यह अस्पताल एवं इसके शिक्षा एवं अनुसंधान विभाग चरण बद्ध तरीके से अगले तीन से चार वर्षो में परिचालन शुरू कर देंगे। उन्होंने कहा कि दिल्ली एआईआईवीएस के चालू होते ही देश के अन्य हिस्सों में भी उसका विस्तार किया जा सकता है। केन्द्रीय मत्स्य पालन, पशुपालन एवं डेरी मंत्री एआईआईवीएस के संचालन मण्डल के पदेन अध्यक्ष होंगे। जबकि मंत्रालय के सचिव बोर्ड के सचिव भी होंगे। एम्स के मामले में केन्द्रीय स्वास्थ्य मंत्री संचालन मंडल के पदेन अध्यक्ष हैं। एआईआईवीएस के संचालन मंडल में केन्द्रीय पशुपालन आयुक्त, भारतीय पशु चिकित्सा परिषद के अध्यक्ष, पॉच पशु चिकित्सा विश्वविद्यालयों के वाइस चेयरमैंन और राष्ट्रीय अनुसंधानों के निदेशक शामिल होंगे।

एआईआईवीएस राज्य पशु चिकित्सा विश्वविद्यालयों और भारतीय पशुचिकित्सा अनुसंधान संस्थान आईवीआरआई एवं राष्ट्रीय डेरी अनुसंधान संस्थान एनडीआरआई करनाल जैसे राश्ट्रीय स्तर के संस्थानों के मौजूदा पशु चिकित्सा अनुसंधान प्रयासों एवं शैक्षिणिक लक्ष्यों को आगे बढ़ाएगा। मसौदा प्रस्ताव में कहा गया है कि पहले चरण में करीब 200 छात्रों को नीट एवं एनटीए मेरिट सूची के आधार पर संस्थान में प्रवेश दिया जाएगा। एआईआईवीएस के परिसर में चार प्रमुख इमारतें होंगी। सबसे पहले पशु चिकित्सा सुपर स्पेशलिटी अस्पताल होगा और उसके बाद शैक्षिणिक ब्लाक, अनुसंधान ब्लाक एवं प्रशासनिक ब्लाक आदि होंगे। इसके अर्न्तगत हर तरह से मरीज यानी पशु तथा पशुपालकों का ध्यान रखा जाएगा। ताकि हमारे देश का पशुधन विकास को समुचित गति मिल सके।

प्रधानमंत्री जनऔषधि केन्द्रों की जबरदस्त सफलता के बाद केन्द्र सरकार अब देश भर में पशुधन औषधि केन्द्रों को खोलने के लिए काफी सक्रियता से काम कर रही है। मामले से जुड़े अधिकारियों के अनुसार इन केन्द्रों पर पशुओं के इलाज के लिए बेहद कम कीमत पर जेनरिक दवाइयॉ उपलब्ध होगी। इस योजना के लिए आवंटित कुल रकम और शुरूआती चरण के खोले जाने वाले स्टोरों की संख्या तय करन पर काम चल रहा है। जन औषधि केन्द्र की ही तरह इन पशुधन औषधि केन्द्रेां का संचालन भी सरकारी ऐजेंसियों और निजी उद्यमियों के द्वारा संयुक्त रूप से किया जा सकेगा।

फिलहाल इस प्रस्ताव के व्यापक विवरण के साथ ही कैबिनेट नोट तैयार किया जा रहा है, जिससे इसके बारे में अतिरिक्त जानकारी मिलेगी।

उन्होंने बताया कि जन औषधि केन्द्र की ही तरह पशुधन औषधि केन्दों पर भी लोगों को पशु स्वास्थ्य के लिए विशेष तौर पर उत्पादित सस्ती जेनरिक दवाएं मिलेंगी। कुछ विद्वानों का मानना है कि इस पहल के जरिये ग्रामीण इलाकों में केन्द्र सरकार की पहुँच बेहतर हो सकती है। क्योंकि अधिकतर स्टोर ग्रामीण क्षेत्र में ही शुरू किए जानें की संभावना है। सरकार की इस पहल से पशुपालकों को फायदा होगा और इस प्रकार कृषि समुदाय की मजबूती मिलेगी। जनऔषधि केन्द्रों की ही तरह से पशुधन औषधि केन्द्र से भी ग्रामीण युवाओं को और ग्रामीण व कस्बाई क्षेत्रों में रहने वाले लोगों के लिए रोजगार के अवसर सृजित होंगे। प्रधानमंत्री भारतीय जनऔषधि परियोजना नवंबर 2008 में रसायन एवं उर्वरक मंत्रालय के तहत फार्मास्युटिकल्स विभाग ने शुरू की थी। इसके तहत देश भर में जन औषधि केन्द्र खोले गये हैं। जहॉ लोगों को सस्ती दर पर जेनेरिक दवाएं उपलब्ध कराई जाती हैं।

देश भर में 31 मार्च 2023 तक करीब 93025 जनऔषधि केन्द्र चल रहे थे। इन केन्द्रों पर उपलब्ध औषधियों में 1800 दवाएं और 285 सर्जिकल समान शामिल हैं। मगर उम्मीद की जा रही है कि अब ये ऑकड़ा और अधिक तेजी से बढ़ जाएंगे। इस योजना का संचालन सोसायटी पंजीकरण अधिनियम के तहत पंजीकृत सोयायटी फार्मास्युटिकल्स एंड मेडिकल डिवाइसेज ब्योंरो आफी इण्डिया द्वारा किया जाता है। इन स्टोरों का मुख्य उद्देश्य आबादी के सभी वर्गों और विशेषकर आर्थिक रूप से कमजोर लोगों की गुणवत्तापूर्ण दवाओं तक पहुँच सुनिश्चित करना है। इसके अलावा इस पहल का उद्देश्य शैक्षिक एवं प्रचार अभियानों के जरिए लोगों में जेनरिक दवाओं के बारे में जन-जागरूकता बढ़ाना और इस भ्रान्ति को दूर करना है कि हमेशा अधिक कीमत वाली दवाओं की गुणवत्ता ही बेहतर होती है। साथ यह योजना का उद्देश्य लोगों को पशुधन जनऔषधि स्टोर खोलने के लिए प्रोत्साहित करते हुए रोजगार सृजन को बढ़ावा दिया जाना है।

जहॉ तक जनऔषधि केन्द्र का सवाल है तो केन्द्र सरकार एक निश्चित सीमा तक मासिक खरीदारी पर प्रोत्साहन प्रदान करती है। इसके अलावा स्टोर के लिए फर्नीचर, कंप्यूटर एवं प्रिंटर खरीदने के लिए सरकार एक मुश्त अनुदान भी देती है। जनऔषधि केन्द्रों पर उपलब्ध जेनरिक दवाओं की कीमत खुले बाजार में बिकने वाली ब्रॉण्डेड दवाओं की कीमत के मुकाबले 50 से 90 फीसदी तक कम होती है। मनुष्य और पशु एक दूसरे के पूरक हैं। पशुओं के कल्याण मानकों में सुधार को लेकर दुनियॉ भर में लोगों में जागरूकता बढ़ाने के उद्देश्य से प्रतिवर्ष 4 अक्टूबर को विश्व पशु कल्याण दिवस मनाया जाता है। पशुओं के अधिकारों के लिए यह एक ऐसी वैश्विक पहल है, जिसका प्रमुख उद्देश्य पशु कल्याण में लिए बेहतर मानक सुनिश्ति करना है।

दरअसल पशु मानव जीवन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं जो न के केवल हमारे जीवन को समृद्ध बनाते हैं, बल्कि हमें बेहतर इंसान भी बनाते हैं। पारिस्थितिकी तंत्र में सभी जानवर प्रकृति की पारिस्थितिकी को संतुलित रखते हुए हमारे पर्यावरण की रक्षा को और मानव स्वास्थ्य को बढ़ावा देने में भी समान रूप से महत्वपूर्ण भूमिका में हमेशा रहते हैं। मनुष्य और पशु न केवल एक दूसरे पर निर्भर हैं। बल्कि एक दूसरे के पूरक भी हैं। अगर देखा जाए तो हर तरीके से किसी भी मायनों में दोनों को अस्तित्व ही खुशहाली का प्रतीक है और यदि जंगल से किसी एक जीव की प्रजाति भी लुप्त होती है तो उसका असर सम्पूर्ण पर्यावरण पर पड़ता है। विश्व पशु दिवस विश्वभर में कल्याण मानकों के मिशन के साथ जानवरों के जीवन को बेहतर बनाने के लिए एक ऐसा सामाजिक आन्दोलन है जो प्रतिवर्ष एक निर्धारित थीम के साथ मनाया जाता है। वास्तव में यह दिन विश्वभर में लोगों को न केवल पशुओं की विलुप्तप्राय प्रजातियों के बारे में अवगत कराता है, बल्कि यह भी बताता है कि कैसे उनका संरक्षण किया जाए?

भारत में करीब 70 फीसद आबादी कृषि तथा कृषि संबंधी व्यवस्था पर ही निर्भर है। प्राचीन काल से ही पशुपालन और कृषि व्यवसायों का आपस में गहरा संबंध रहा है। भारत का पशुधन क्षेत्र दुनियॉ के सबसे बड़े पशुओं की आबादी का 11.7 फीसद है और सकल घरेलू उत्पाद के संदर्भ में राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था में पशुधन तथा मत्स्य क्षेत्रों का योगदान क्रमश 4.1, 0.8 प्रतिशत हैं। विद्वानों के अनुसार हमारी ही तरह जानवरी भी प्यार, खुशी, डर और दर्द महसूस करते हैं। लेकिन हम लोग उनके द्वारा बोले गये शब्दों को समझ नही पाते। अतः यह हमारा दायित्व है कि हम उनकी ओर से बोले और सुनिश्चित करें कि उनकी भलाई और जीवन का सम्मान एवं सुरक्षा हो सके। इसके लिए हमें प्रकृति के ओर वापस होना होगा। मानव को पशुओं के साथ संबंधों में प्यार, दुलार, पुचकार, दवा, दर्द को महसूस करना होगा। मनुष्य को पशुधन के प्रति सभ्य बनाना आवश्यक है।

उत्तर प्रदेश सरकार के पशुधन मंत्री धर्मपाल सिंह ने अभी हाल ही में पशुपालन निदेशालय में वर्चुअल इटावा में बने प्रदेश के पहले भेड़-बकरी पालन प्रशिक्षण केन्द्र का लोकार्पण किया। उन्होंने कहा कि भेड़-बकरी के पालन की प्रदेश में बेहतर संभावनाएं हैं, जो किसानों व पशुपालकों की आय दोगुनी करने में सहायक होगा। इस केन्द्र में इच्छुक लोगों को व्यवसायिक प्रशिक्षण दिया जाएगा। पशुधन मंत्री ने कृत्रिम गर्भाधान कार्यक्रम में जुड़े प्रदेश के लगभग 500 मैत्रियों के साथ संवाद भी किया। उन्होंने कहाकि पशु पालन को गुणवत्ता युक्त पशु प्रजनन सुविधाएं समय से उपलब्ध कराएं। इससे पशु पालकों की आय दोगुनी करने के प्रयासों को बल मिलेगा। माननीय मंत्री ने आनलाइन जुड़कर अधिकारियों को निर्देश दिया कि गोवंश संरक्षण मुख्यमंत्री की प्राथमिकता में है। एक नवंबर से शुरू निराश्रित गोवंश संरक्षण अभियान में कोई भी ढ़िलाई न बरती जाए। गोआश्रय स्थलों के सुदृढ़ीकरण, विस्तारीयकरण व अन्य आवश्यक व्यवस्था सम्बन्धी काम तय समय में पूरा किया जाए। पशुधन व दुग्ध विकास के अपर मुख्य सचिव डा0 रजनीश दुबे ने कहा कि मैत्री के प्रोत्साहन व उनकी कौशल क्षमता वृद्धि के लिए सत्त प्रयास किया जा रहा है। कृत्रिम गर्भाधान से अधिक उत्पादक व उन्नतिशील प्रजाति के पशुओं को बढ़ावा दिया जा रहा है। इससे किसानों व पशु पालकों की आय में त्वरित बृद्धि की संभावना निहित है।

आमजन और पशुधन के विकास हेतु प्रदेश सरकार योजना बद्ध तरीके से कार्य कर रही है। इसकी कुछ एक योजनाओं का वर्णन इस प्रकार है- 1-पशु प्रजनन एवं पशुधन प्रक्षेत्र। 2- पशुधन विपणन। 3- कुक्कुट प्रक्षेण एवं कुक्कुट विकास। 4- पशु प्रर्दशन एवं प्रदर्शनी। उत्तर प्रदेश पशुधन विकास परिषद। पशु पालन एवं डेयरी विभाग भारत सरकार। भारत पशुचिकित्सा अनुसंधान संस्थान, इज्जतनगर बरेली। राष्ट्रीय डेरी विकास बोर्ड। केन्द्रीय बकरी अनुसंधान संस्थान। केन्द्रीय पक्षी अनुसन्धान संस्था। राष्ट्रीय अश्व अनुसंधान संस्थान। भारतीय चारागाह एवं चारा अनुसंन्धान संस्थान। भारतीय जीव-जन्तु कल्याण बोर्ड। पंडित दीनदयाल उपाध्याय पशु चिकित्सा विज्ञान विश्वविद्यालय एवं गो-अनुसन्धान संस्थान मथुरा। पी0सी0डी0एफ0 प्रादेशिक, को-आपरेटिव डेरी फेडरेशन। उत्तर प्रदेश कुक्कुट विकास नीति-2022 के अन्तर्गत-10000 कमर्शियल लेयर फार्म के स्थापना की योजना। उत्तर प्रदेश कुक्कुट विकास नीति-2022 के अन्तर्गत 30000 कमर्शियल लेयर फार्म की स्थापना की योजना। उत्तर प्रदेश कुक्कुट विकास नीति-2022 के अन्तर्गत 60000 कमर्शियल लेयर फार्म के स्थापना की योजना। उत्तर प्रदेश कुक्कुट विकास नीति-2022 के अंतर्गत 10000 ब्रायलर पैरेंन्ट फार्म के स्थापना की योजना।

उत्तर प्रदेश सरकार ने पशुओं के स्वास्थ्य को घ्यान में रखने हुए भारत सरकार के सहयोग से पशु चिकित्सा एम्बुलेंस का संचालन भी किया है। दिनॉक 26-03-2023 दिन रविवार को उत्तर प्रदेश सरकार के न्यायप्रिय मुखिया, पशुधन प्रेमी गोवंश

के रक्षक, अबोध जीवों पर दया करने वाले यशस्वी मुख्यमंत्री सम्माननीय महन्त आदित्यनाथ योगी जी ने सचल पशु चिकित्सा के संचालन हेतु 520 मोबाइल वेटनरी यूनिट का शुभारम्भ झण्डी दिखाकर किया है।

इस प्रकार से आज यह सिद्ध हो रहा है कि भारत सरकार और उत्तर प्रदेश सरकार तथा जन-जन यह समझने लगा है कि अब और अधिक पशुधन की उपेक्षा ठीक नहीं है। अगर हम अपना विकास और जीवन सुखपूर्ण जीना चाहते हैं तो हमें पशुधन के स्वास्थ्य का भी उतना ही ध्यान रखना होगा, जितना की मानव की स्वास्थ्य का रखते हैं। इसी उद्देश्य की पूर्ति हेतु आज भारत सरकार और प्रदेश सरकार में बैठे जिम्मेदार अपनी जिम्मेदारी संभालने से पीछे नहीं हो रहे हैं। वैसे भी पशुधन मानव जीवन का एक सशक्त आत्मनिर्भरता का साधन है। खास तौर से ग्रामीण जीवन के लिए। ❑

पता : ग्राम जीगों पोस्ट तिलेण्डा,
जिला रायबरेली, उत्तर प्रदेश-229301
मो0 : 9956696645

लघुकथा -

'मां की याद'

- सतीश 'बब्बा'

इत्ता सा, बित्ता भर का लौंडा, पहनकर चुस्त फिटिंग का पैंट और शर्ट ऐसे तनकर चल रहा था। मानो जिला जीत, जिला चैंपियन पहलवान हो!

उसके पीछे शालीन, कुलीन, गठीले बदन वाली सुंदर औरत चल रही थी।

मेरा मन नहीं माना और मैंने उससे पूछ ही लिया, 'ऐ मिस्टर कहां जा रहे हो?'

उसने अपने पीछे चल रही औरत की ओर देखा, बोला कुछ नहीं! उसकी अकड़ बता रही थी कि उसकी बादशाहत उस औरत के बल पर थीय वह उसकी मां ही हो सकती है।

मैंने फिर कहा, 'मेरे साथ चलो, मिठाई खिलाऊंगा और दूध भी पीने को दूंगा!'

असल में सच बताऊं, हकीकत यह थी कि, वह मुझे भा गया था। और मुझे उससे प्यार हो गया था। तुरंत अभी-अभी देखते ही!

फिर वह उस औरत से लिपट गया। जैसे अभेद्य किले में पहुंच गया हो!

वह उसकी मां थी, मुझे विश्वास हो गया था। उस औरत ने कहा, 'चले जाओ न, अंकल के साथ!'

फिर भी वह नहीं माना और उसकी मां ने उसे उठाकर अपनी छाती से लगा लिया क्योंकिय वह समझ गई थी कि, वह रो देगा।

मैंने उसके कपोलों को सहलाया और मेरे नयन प्रेमाश्रु से भर आए। क्योंकि मुझे मेरी मां की याद जो आ गई थी। ❑❑

पता : सतीश चन्द्र मिश्र, ग्राम़ पोस्ट आफिस-कोबरा, जिला - चित्रकूट, उत्तर - प्रदेश,
पिनकोड - 210208. मोबाइल - 9451048508, 9369255051. ई मेल- *babbasateesh@gmail-com*

मौन चीत्कार

— अयोध्या प्रसाद

बड़ी सी मशीन से
बड़ी बेरहमी से
काटे जा रहे,
एक सघन छायादार
विशालकाय पेड़ ने
पेड़ काटने वाले
मनुष्य से कहा-
....तुम्हारे पुरखों ने
मुझे रोपा था ।
बड़े शौक से !
....खूब देखभाल की मेरी,
मेरे पौध स्वरूप की !
और सींचा था मुझे
आशाओं के
स्नेहिल जल से !

बचाया था
प्राकृतिक आपदाओं से !
राह चलती
गाय भैंसों से !
....भेड़ बकरियों से !

की थी सुरक्षा
अपनी संतान की तरह !
रखा, कड़ी निगरानी में
बहुत संभालकर मुझे !
....पेड़ बन जाने तक !

उनके इस उपकार के
बदले मैंने उन्हें
....आजीवन,
आक्सीजन दी !
छांव दी !
फल दिए !
समय समय पर
लकड़ियां दी !
और निरपेक्ष भाव से
पीढ़ियों तक सेवा की !
उनके बच्चों की !
समाज की !
निस्वार्थ !
कल्याणार्थ !

गरमी से परेशान !
क्लांत इंसान !
मेरी शीतल छाया में
जी भर विश्राम पाता था ।

और विश्राम उपरांत
अपने गंतव्य की ओर !
प्रस्थान कर जाता था !

.... मैं तो सर्वथा निर्दोष था !
फिर भी तुम्हारे कर्मों से
अपने जीवन के
बलि की सजा पाई !
मैं श्राप तो नहीं,
एक सुझाव जरूर दूंगा !
क्योंकि
मेरा धर्म
प्राणियों की सेवा करना है ।
...प्रकृति का
संतुलन बनाए रखना है ।

क्रमशः....

शरण में आए प्राणियों को
शीतलता प्रदान करना है ।

मेरी एक बात
अपनी खूंट में
सुरक्षित, गांठ बांध लेना !
और आजीवन
जरूर याद रखना !

यदि तुमने
मेरे विकल्प के रूप में
सघन छाया वाले
पेड़ नहीं लगाए तो,
आने वाले समय में
आक्सीजन, छाया
और हरियाली को तरसोगे !
इनकी कमी से
तड़पोगे, बिलबिलाओगे !
बढ़ते तापमान के कहर से
यूं ही तिलमिलाओगे ।

याद रखना
कृत्रिम संसाधन भी
एक सीमा तक ही
आराम दिलाते हैं ।
साथ ही तमाम समस्याएं
तोहफे में दे जाते हैं ।
हम आदिकाल से
प्राकृतिक धरोहर हैं !
आक्सीजन के स्रोत हैं !
अनमोल हैं !

समय रहते तुम यदि
नहीं चेते तो,
तुम्हारे कर्मों का फल
तुम्हारी ही भावी
पीढ़ियां भुगतेंगी ।
और सघन वन, वृक्ष बिन
त्राहिमाम् त्राहिमाम्
चीत्कार करेंगी ।

....कहते कहते
....पेड़ कट चुका था !
और अचानक
धराशायी हो गया ।
....पेड़ शांत हो गया !
निर्जीव, निष्प्राण हो गया !

इंसान चुप था !
शीश व नजरें झुकाए !
निरूत्तर !
निःशब्द !
संज्ञात अपराधी सा !

❑❑❑

पता : म0नं0–551घ/506, नन्दनगर, (निकट जय प्रकाश नगर)
आलमबाग, लखनऊ–226005 मो0– 8318926738

डॉ0 श्यामा प्रसाद मुखर्जी भारतीय राजनीति के प्रणेता

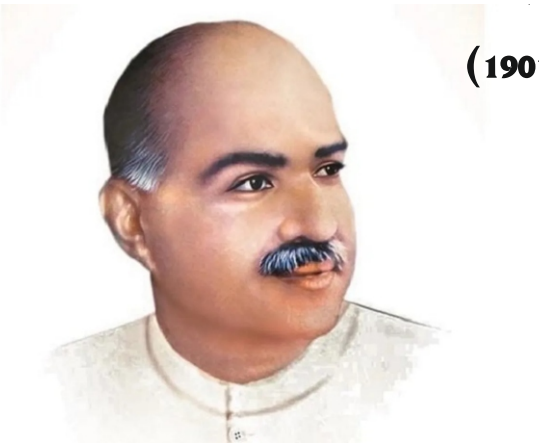

(1901–1953)

अखिलेश सिंह चन्देल
डायरेक्टर
तालुकदार कृषक फारमर्स प्रोड्यूसर्स कम्पनी लि.

बीसवीं शताब्दी में भारत के शैक्षणिक, राजनैतिक एवं सांस्कृतिक जीवन पर जिन महापुरूषों ने अपनी अमिट छाप डाली है उनमें डा0 श्यामा प्रसाद मुखर्जी अद्वितीय थे। वे अपने महान पिता सर आशुतोष मुखर्जी जी की वात्सल्यपूर्ण देखरेख में बड़े हुए। श्यामा प्रसाद मुखर्जी का सारा जीवन देश-सेवा का एक निरन्तर यज्ञ था। कलकत्ता विश्वविद्यालय पांडिचेरी के निर्माता के रूप में उनकी शैक्षणिक व सांस्कृतिक क्षेत्र में की गई सेवाएँइन महान संस्थाओं के जीवन-विकास का अक्षुण्ण अंग बन चुकी है। इन क्षेत्रों में उनका काम भावी भारत के शिक्षा-शास्त्रियों के लिए सदा प्रेरणा-स्रोत और मार्गदर्शन रहेगा।

वे एक शिक्षाशास्त्री ही नहीं थे उनकी प्रतिभा बहुमुखी और हृदय विशाल था। जब 1943 में बंगाल में भीषण दुर्भिक्ष पड़ा तो सारा देश उनके मानवता-प्रेम और दुःखी असहाय जनों की एक निष्ठ सेवा से दंग रह गया। बंगाल के वित्त मंत्री और सवतंत्र भारत के प्रथम उद्योग तथा व्यापार मंत्री के कारण उन्होंने विलक्षण प्रशासकीय योग्यता का परिचय दिया।

परन्तु जिस बात ने उनको स्वतंत्रता के पूर्ण और पश्चात् भारतीय देशभक्तों का शिरोमणि बना दिया वह थी उनकी विशुद्ध राष्ट्र प्रेम भावना, भारत की स्वतंत्रता और अखण्डता के लिए निरन्तर संग्राम और उसी में अपना जीवनोत्सर्ग। कांग्रेस की अयथार्थवादी और मुस्लिम तुष्टिकरण की अव्यवहारिक नीतियों के दुष्परिणामों को उन्होंने एक द्रव्य की भांति उस समय भांपा जब चारों ओर कांग्रेस की तूती बोल रही थी। उनके सार्थक प्रयत्न और निर्भीक मार्गदर्शन के कारण ही आधा पंजाब और आधा बंगाल पाकिस्तान में जाने से बचा लिया गया। अखण्ड भारत के इसी प्रेम ने उन्हें काश्मीर में शेख अब्दुल्ला के चलाये हुए षडयन्त्र के विरूद्ध खड़ा किया। 23 जून,1953 को काश्मीर के जेल में एक बंदी के रूप में में उनका आत्मोसर्ग उस महान् कर्मयोगी का भारत की एकता एवं अखण्डता के लिए महान बलिदान था। वे अपना जीवन देकर भारत माँ का मुकुट उसके सिर पर सुरक्षित कर गए। मृत्यु से पहले अपने जीवन-दीप से भारतीय जनसंघ का दीप जलाकर अपने अधूरे कार्य को पूरा करने का मार्ग या साधन भी वे प्रशस्त कर गए। हमारे चरित्रनायक डा0 श्यामाप्रसाद मुखर्जी के पिता सर आशुतोष मुखर्जी उस समय के देशभक्तों में अग्रणी थे। कलकत्ता विश्वविद्यालय के उपकुलपति

के रूप में सर आशुतोष ने शिक्षित भारतीयों की एक पूरी पीढ़ी को अपने आदर्शो के अनुरूप ढाला और ये आदर्श सबसे अधिक उनके दूसरे पुत्र श्यामा प्रसाद मुखर्जी में प्रतिमूर्ति हुए जिनका जन्म पतिपरायण साध्वी श्रीमती योगमाया देवी के गर्भ से 6 जुलाई सन, 1901 में कलकत्ता में हुआ।

प्रकृति ने श्यामा प्रसाद को सर आशुतोष के महान् गुणों से विभूषित किया था। अन्य गुण उन्होंने उनके प्रत्यक्ष उदाहरण और मार्गदर्शन से ग्रहण किये। श्यामा प्रसाद पर अपने पिता के सुदृढ़ राष्ट्रीय विचारों और घर के भारतीय वातावरण का पूर्णरूपेण गहरा असर पड़ा। उनका विरूद्ध राष्ट्र प्रेम जिसने आगे जाकर श्यामा प्रसाद को अपने समकालीन राजनीतिज्ञों में विख्यात बनाता, उनके पिता की ही अमूल्य देन थी। उन्होंने आजीवन यह भरसक प्रयत्न किया कि वे अपने पिता सर आशुतोष के जीवन मूल्यों एवं आदर्शो की साकार मूर्ति बन सके। श्यामा प्रसाद का बाल्यकाल उत्तरी कलकत्ता के भवानीपुर क्षेत्र में बीता जहां इनका पुश्तैनी मकान अभी तक विद्यमान है। सर आशुतोष ने इसे सभी विषयों की दुर्लभ पुस्तकों से भर दिया था। पुस्तकें उनका एकमात्र 'इष्ट' और 'चिरमित्र' थीं जिनके साथ वे दिन-प्रतिदिन वार्तालाप करते थे। बालक श्यामा प्रसाद के हृदय और मस्तिष्क पर घर और बारह की बातों का परोक्ष प्रभाव पड़ रहा था। सर आशुतोष भी अपने होनहार पुत्र की उचित शिक्षा-दीक्षा की योजना पड़ रहा था। वे अच्छी तरह समझते थे। वे अच्छी तरह समझते थे कि ब्रिटेन के पब्लिक स्कूलों की पद्धति पर चलने वाले इन स्कूलों में होनहार बालकों को राष्ट्र-भावना से शून्य किया जा सकता है। अतएव उन्होंने अपने मित्र श्री विश्वश्वर मित्तर इंस्टीच्यूट खोलने की प्रेरणा दी, जहां श्यामा प्रसाद और उसके भाईयों ने प्रारम्भिक शिक्षा प्राप्त की।

घर और स्कूल की कठोर शिक्षा तथा सर आशुतोष की सर्तक दृष्टि एवं पितृसुलभ संरक्षण ने श्यामा प्रसाद की जन्मजात विशेषताओं और प्रतिभा को चमकने में सहायता दी। वे अपनी कक्षा में सदैव उच्च शीर्ष-स्थान पर रहे। स्कूल के छात्र होते हुए भी वे एम0ए0 और बी0ए0 की पुस्तकें पढ़ते रहे। मित्तर इंस्टीच्यूट से छात्रवृत्ति लेकर मैट्रिक उत्तीर्ण करने के बाद श्यामा प्रसाद सन् 1917 में प्रेसीडेन्सी कॉलेज में प्रविष्ट हुए। स्कूल से कॉलेज जाने के इस क्रम से श्यामा प्रसाद के जीवन में एक नये और बहुत महत्वपूर्ण अध्याय का सूत्रपात हुआ। इससे वे अपने पिता के सीधे अनुशासन में आ गये।

इस समय श्यामा प्रसाद बहुत स्वस्थ थे। दिव्य सुव्यवस्थ शरीर, सादा आडम्बर विहीन जीवन और प्रज्ञाशीलता के कारण वे तुरन्त ही अपने प्राध्यापकों और सहपाठियों के स्नेह भाजन बन गए। उन्होंने सन् 1919 में इण्टर आर्ट्स की परीक्षा उत्तीर्ण की और विश्वविद्यालय में प्रथम घोषित हुए। अभी वे एमञएञ में ही थे कि अप्रैल 1922 में श्रीमती सुधा देवी के साथ उनका विवाह हो गया, किन्तु वे अधिक समय तक विवाह बंधन में बंधे न रह सके। दो पुत्र दो पुत्र और दो कन्याओं को जन्म देने के बाद श्रीमती सुधा देवी सन् 1939 में असमय ही काल कवलित हो गई। इसी बीच श्यामा प्रसाद ने सन् 1924 में विश्वविद्यालय में प्रथम आकार प्रथम श्रेणी में बी0एल0 की परीक्षा उत्तीर्ण की और वे कलकत्ता उच्च न्यायालय में वकालत करने लगे। साधिकार भाषा, कुशाग्र बुद्धि, अकाट्य तर्कनाशक्ति और ओजस्विनी वाणी से सम्पन्न होने के कारण उचित ध्यान देने पर वे वकालत के क्षेत्र में खूब चमक सकते थे किन्तु इनकी निस्पृहता ने ऐसा न होने दिया। परिस्थितियों तथा अपने जन्मजात आदर्शवाद से प्रेरित होकर इन्होंने वकालत छोड़ दी और एक विशाल एवं राष्ट्रहित की दृष्टि से अति उपयोगी क्षेत्र में पदार्पण किया। इस प्रकार अपने भारत के न्यायोचित हितों के समर्थन हेतु वे वृहत्तर क्षेत्र में उतर पड़े।

मई 1924 में सर आशुतोष की अकाल मृत्यु श्यामा प्रसाद के जीवन में सबसे दुःखद और अप्रत्याशित घटना थी। सर आशुतोष ने कलकत्ता

हाईकोर्ट के न्यायाधीश के पद से सन् 1923 में विश्राम ग्रहण किया।

कलकत्ता विश्वविद्यालय के प्रमुख निर्माता के रूप में सर आशुतोष की विश्वविद्यालय सम्बन्धी प्रशासकीय बारीकियां तथा और वह था तरूण श्यामा प्रसाद मुखर्जी। इसी लिए सभी हित चिन्तकों का विचार था कि सर आशुतोष द्वारा निर्धारित नीति से संचालित विश्वविद्यालय के स्वस्थ विकास के लिए श्यामा प्रसाद मुखर्जी का सबसे अविच्छिन्न सम्बन्ध बना रहना बहुत आवश्यक था। इसी विचार से प्रेरित होकर श्यामा प्रसाद के पुराने शिक्षक तथा पश्चिम बंगाल के भूतपूर्व गर्वनर स्वर्गीय श्री एच0सी0 मुखर्जी ने सन् 1924 में विश्वविद्यालय की सीनेट में अपना स्थान रिक्त कर दिया ताकि उनके स्थान पर श्यामा प्रसाद निर्वाचित कर लिये जायें। उसी वर्ष जून मास में श्यामा प्रसाद सर आशुतोष के रिक्त स्थान पर सिंडीकेट के सदस्य भी चुन लिये गये। इस तरह अपने पिता के भौतिक तथा आत्मिक उत्तराधिकारी श्यामा प्रसाद पर 23 वर्ष की अल्पायु में ही उनका विश्वविद्यालय सम्बन्धी कार्यभार आ गया।

श्याम प्रसाद जी ने अपने जीवन के अगले 15 वर्षो कलकत्ता विश्वविद्यालय को ही अपना एकमेव कार्यक्षेत्र बनाये रखा। सन् 1939 में सक्रिय राजनीति में पड़ने के बाद भी उन्होंने शिक्षा के क्षेत्र में और विशेषकर कलकत्ता विश्वविद्यालय के प्रति अपनी गहरी रूचि बनाये रखा। इस अरसे में उन्होंने उच्च-शिक्षा परिषद के प्रधान, आर्ट साइंस फैकल्टी के डीन तथा उपकुलपति के रूप में एकाग्र मन से विश्वविद्यालय की सेवा की।

वे सन् 1929 में कांग्रेसी प्रत्याशी के रूप में कलकत्ता विश्वविद्यालय का प्रतिनिधित्व करने के लिए बंगाल विधानसभाओं का बहिष्कार करने का निर्णय किया तो उन्होंने इससे त्याग-पत्र दे दिया। एक व्यवहारिक तथा यथार्थवादी व्यक्ति होने के नाते उन्होने अनुभव किया कि उस समय विधानसभाओं का बहिष्कार करने का अर्थ विदेशी सरकार के

पिट्ठुओं के लिए मैदान साफ करना था जो देश हित में न था। अतः कलकत्ता विश्वविद्यालय की ओर से स्वतंत्र सदस्य के रूप में वे सन् 1930 में पुननिर्वाचित हुए। तब तक शिक्षा ही उनका प्रमुख कार्यक्षेत्र था, इसलिए कौंसिल में वे विश्वविद्यालय के हितों की रक्षा में ही सदैव तत्पर रहे। 33 वर्ष की आयु में उन्हें कलकत्ता विश्वविद्यालय का उपकुलपति की शिक्षा के सम्बन्ध में अपने उच्चादर्शो और लक्ष्यों को कार्यान्वित करने का अवसर मिला। श्यामाप्रसाद के उपकुलपतित्व में ही सन् 1936 में श्री रवीन्द्रनाथ टैगोर ने बंगाली में अपना दीक्षान्त भाषण दिया जो विश्वविद्यालय के इतिहास में सर्वथा नवीन और उचित कदम था। यह बंगाली तथा अन्य भारतीय भाषाओं पर अंग्रेजी की प्रधानता की समाप्ति का श्रीगणेश था।

उन्होंने शारीरिक शिक्षा पर विशेष बल दिया। छात्रवर्ग के प्रति अपनी असीम सहानुभूति के कारण वे छात्रों के स्नेह, सम्मान और श्रद्धा के अतुल्य पात्र बन गये थे। उनका विचार था कि समाज और राज्य का यह कर्तव्य है कि शिक्षित लोगों को उपयोगीकाम दें। उन्होंने स्वयं उद्योग तथा विज्ञान सम्बन्धी शिक्षा की ओर अधिक ध्यान दिया। कलकत्ता विश्वविद्यालय को भारतीय ज्ञानपीठ बनाने के लिए श्यामा प्रसाद ने कई कार्य किये । उन्होंने विश्वविद्यालय के पुस्तकालय को उचित संशोधित एवं सवंर्द्धित किया। ❑

पता : मकान नं0 24,
अयोध्याधाम कालोनी,
लक्ष्मणपुर, शिवपुर, वाराणसी
पिन-221003
मो0 : 7068991602

बूढों का कैसा हो मौसम

- श्यामल बिहारी महतो

कौन कहता है कि बुढ़े सपने नहीं देखते,
कौन कहता है बुढ़े इश्क नहीं करते,
आज भी मेरे सपनों में लड़कियां आती हैं
आज भी वो अमरूद जामुन तोड़ने को कहती हैं
आज भी वो आमों पर निशाना लगाने को उकसाती हैं
आज भी वो खेत खलिहानों में लुका छुपी को बुलाती हैं
आज भी वो गांव के बड़े तालाब में -
बतखों वाली पनडुब्बी खेल को ललकारती हैं
आज भी वोभूंजा चना-गुड लाने को पुचकारती हैं
आज भी वो भोर-भिनसौर देह से चादर खींच -
महुआ चुनने चलने को पीछे से धकेलती हैं
क्योंकि वो जानती हैं,
यह सब आज के युवाओं के बस की बात नहीं है
आज के युवा यह सब नहीं कर सकेगा
गिफ्ट में महंगी से महंगी मोबाइल दे देगा
उसका और उसके महीने भर का रिचार्ज कर देगा
पर वो आम जामुन तोड़ लाकर नहीं देगा
कंद मूल, फल फूल, लाकर नहीं देगा
जंगली बेर,कनोद, सैंयाकोइर,केन्द,भेलवा,पियार
खखसा -कुंदरी, और वन खीरा लाकर नहीं देगा
यह सब उन्होंने कभी देखा नहीं, कभी चखा नहीं है
कभी बिहड़ जंगलों में गये नही
कभी पेड़-पर्वतों पर चढ़े नही
और सपने में यह सब आते नहीं
गूगल कोई जंगल नहीं है
गूगल कंद मूल फल उगाते नहीं
गूगल का जंगल से कोई वास्ता नहीं
हकीकत से उसका नाता नहीं!
तभी तो कहता हूं :-
'बूढों का मौसम कभी बुढ़ाता नहीं
इश्क तो करते हैं, पर जताते नहीं।'

❑❑

पता : बोकारो, झारखंड
फोन नं 6204131994

- हरी राम यादव फैजाबादी
भूतपूर्व सैनिक/स्वतंत्र लेखक

'फैलाओ हर जगह हरियाली'

खूब लगाओ पेड़ धरा पर,
फैलाओ हर जगह हरियाली।
पर याद रहे उनको पानी देना,
सुबह शाम तुम्हें पेड़ों के माली ।
सुबह शाम तुम्हें पेड़ों के माली,
जाली लगाकर उन्हें बचाना।
ग्रंथ हमारे सदियों से कह रहे,
एक वृक्ष होत सौ पुत्र समाना।
फोटो तक ही न सीमित हो,
हमारे वृक्षारोपण अभियान।
रोपण से ज्यादा जिम्मेदारी,
बचाना उनके अमूल्य प्राण ।।

स्वच्छ हवा देते हैं पेड़ हमें,
देते गर्मी से हमको आराम।
फल और फूल से उनके,
निशि दिन चलता सबका काम।
निशि दिन चलता सबका काम,
दाम हमारी मेहनत का चुकाते।
अपना कण-कण देकर हमको,
धरती पर वह धन्य हो जाते।
पीढ़ी एक लगाती है उनको,
वह अगली का भी रखते ध्यान।
परमारथ में वह जीते जीवन,
देते सबको परहित का ज्ञान ।।

❑

पता : सतगुरू पुरम कालोनी, चरन भट्ठा रोड,
निकट एस.जी.पी.जी.आई., लखनऊ
मो. -7087815074

सावन के महीने में नॉनवेज को लेकर क्या कहता है विज्ञान

श्रीमती दीप माला सिंह
शिक्षिका
संत अतुनानन्द कान्वेंट स्कूल, वाराणसी

सावन का महीना बेहद पवित्र माना जाता है। सावन में कई ऐसी चीजें हैं जो नहीं खानी चाहिए, खासकर नानवेज। सावन के महीने में नानवेज न खाने को लेकर कई धार्मिक और वैज्ञानिक कारण हैं। मान्यताओं के अनुसार सावन के महीने में किसी जीव की हत्या कर उसे खाना बड़ा पाप माना जाता है। हिन्दू धर्म की मान्यताओं के अनुसार सावन के महीने में आपको नॉनवेज न खाकर पाप से बचना चाहिए। नॉनवेज न खाने को लेकर कई धार्मिक मान्यताएं प्रचलित हैं, लेकिन इसे लेकर विज्ञान भी अपने तर्क देता है।

सावन का महीना वर्षा ऋतु में पड़ता है, इस समय कई कीड़े होते हैं, कई जानवर इनको खाते हैं, अगर इनका सेवन काई आदमी करता है तो उसे

कई प्रकार की बीमारियां हो सकती हैं। ऐसे में सावन में नॉनवेज का सेवन करना सही नहीं है। वैज्ञानिकों का कहना है कि सावन के महीने में मछलियां, पशु-पक्षी सभी में गर्भाधान करने की सम्भावना होती है। किसी प्रेग्नेंट जीव को खाने से हार्मोनल समस्याएँ हो सकती हैं, साथ ही इस महीने में बारिश ज्यादा होती है और आसमान में बादल छाए रहते हैं, जिसके चलते कई बार सूर्य दिखायी नहीं देता और सूर्य की किरणें हम तक पहुँच नहीं पाती है, जिसकी वजह से हमारी पाचन शक्ति कमजोर हो जाती है। नॉनवेज को पचने में समय लगता है और नॉनवेज न पच पाने के चलते स्वास्थ्य

सावन का महीना वर्षा ऋतु में पड़ता है, इस समय कई कीड़े होते हैं, कई जानवर इनको खाते हैं, अगर इनका सेवन काई आदमी करता है तो उसे कई प्रकार की बीमारियां हो सकती हैं। ऐसे में सावन में नॉनवेज का सेवन करना सही नहीं है।

सम्बन्धी परेशानियाँ हो सकती हैं। इन सभी कारणों के चलते सावन के महीने में नॉनवेज का सेवन करना हमारे स्वास्थ्य के लिए हानिकारक हो सकता है। आयुर्वेद के अनुसार बारिश में इम्यूनिटी कमजोर होने के कारण ऑयली, नॉनवेज या मसालेदार खाना नहीं खाना चाहिए। इससे हमारी पाचन क्रिया पर बुरा असर पड़ता है। आयुर्वेद में सावन के महीने में हल्का भोजन करने की सलाह दी जाती है।

बारिश में कई तरह के संक्रमण फैलने का खतरा रहता है। इसकी चपेट में जानवर भी आ जाते हैं ऐसे संक्रमित जानवरों का मांस खाने से शरीर के भी संक्रमित होने का खतरा रहता है। ❑

पता : एस-2/376ए-12,
सिकरौता, भोजूवीर वाराणसी,
उ0प्र0 पिन-221002

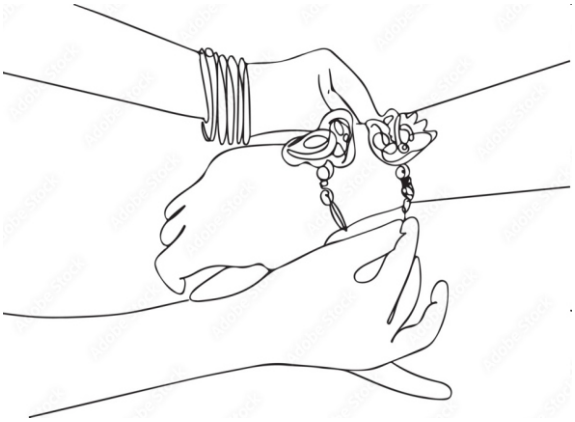

पवित्र बंधन रक्षाबन्धन

— श्रीमती कुसुम सिंह
एम.ए., बी.एड.

भारत के विश्व गुरू होने के कारण यहाँ के प्रत्येक रस्म रिवाज और पर्व में मनुष्य को सशक्त, खुशहाल और सुन्दर बनाने का प्रयास होता है। इनमें पवित्र धागे का पर्व रक्षाबन्धन का बड़ा महत्व है। रक्षाबन्धन का पर्व श्रावण मास में पूर्मिमा के दिन मनाया जाता है। पूर्णिमा अर्थात् चन्द्रमा का सम्पूर्ण रूप।

यह पर्व भाई-बहन के अटूट स्नेह का प्रतीक है। बहन पूजा-विधि के जरिए जब अपने भाई के हाथों की कलाई में पवित्र डोर बॉधती है, तो आश्वस्त हो जाती है कि उसकी हर तरह से रक्षा होगी। यह स्नेह का ऐसा सम्बन्ध है जिसमें बहना भी भाई के लिए मंगल कामना करती है। एक पतली पवित्र डोर रिश्तों की अहमियत को उजागर कर देती है।

रक्षाबन्धन का पर्व अब भले ही भाई-बहन के स्नेह के रिश्ते को लेकर प्रचलित हो, लेकिन इस परम्परा की शुरूआत भाई-बहन से न होकर मनुष्यों को आसुरी वृत्तियों से मुक्त होने के प्रयास को लेकर मानी जाती है। पुराणों में कहा गया है कि असुरों और देवताओं के युद्ध में इन्द्राणी ने इन्द्र को रक्षाबन्धन बांधा था। इसी तरह के कई आख्यान पुराने ग्रन्थों में मिलते हैं। लेकिन आज के सन्दर्भ में यह भाई-बहनों का अपना पर्व है। एक-दूसरे की खुशियों को चाहते हुए यह पर्व पूरे वर्ष उल्लास के साथ मनाया जाता है।

> एक पतली पवित्र डोर जो भाई-बहन के रिश्ते की अहमियत को उजागर कर देती है।

वास्तव में मनुष्य को विकारों, आसुरी संस्कारों और व्यभिचारों से मुक्त होने के लिए पवित्रता के बल की आवश्यकता होती है। जब मनुष्य पवित्रता की राह को छोड़कर चल पड़ता है। तब पूजा विधान के साथ ऐसी ही डोर पहनी जाती थी। यह जोर मनुष्यय की रक्षा करती थी। इसी तरह युद्ध के लिए जाते हुए ऐसी ही डोर इसी विश्वास के साथ हाथों में बांधी जाती थी कि उससे सुरक्षा बनी रहेगी। पहले ब्राह्मण भी केवल एक पीला पतला धागा अपने जजमानों को बांधते थे जिसे रक्षासूत्र

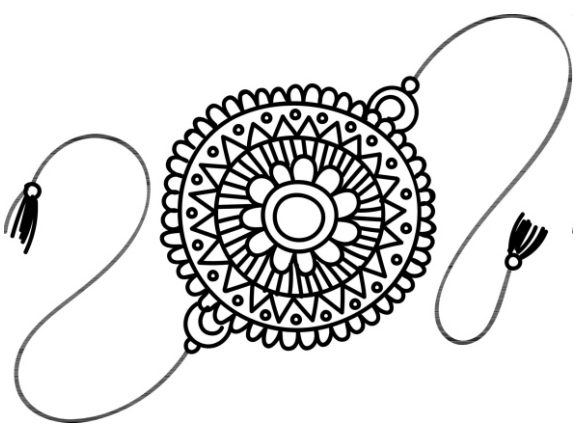

कहा जाता था। यह प्रथा अब भी कहीं-कहीं प्रचलित है। प्राचीन समय से ही परम्परा रही है कि घर या मन्दिर में कोई अनुष्ठान कराते समय ब्राह्मण अथवा पुजारी हाथ से रक्षा करने की कामना करते हैं। बाद में यही परम्परा भाई-बहनों के स्नेह बन्धन के रूप में स्वीकार की गई। बहनें अपने भाइयों की कलाई में राखी बांधे लगीं। यह माना गया कि जिस भावना और विश्वास से बहन ने भाई की कलाई में पवित्र धागा बांधा है, उससे उसे हमेशा बल मिलेगा। उसके जीवन में खुशियां बनी रहेंगी। नकारात्मक चीजें उस पर हावी नहीं होंगी। इसी धागे में वह ताकत होगी जो उसे हमेशा अपनी बहन की रक्षा के लिए प्रेरित करती रहेगी।

रक्षाबन्धन का अर्थ ही होता है रक्षा के लिए

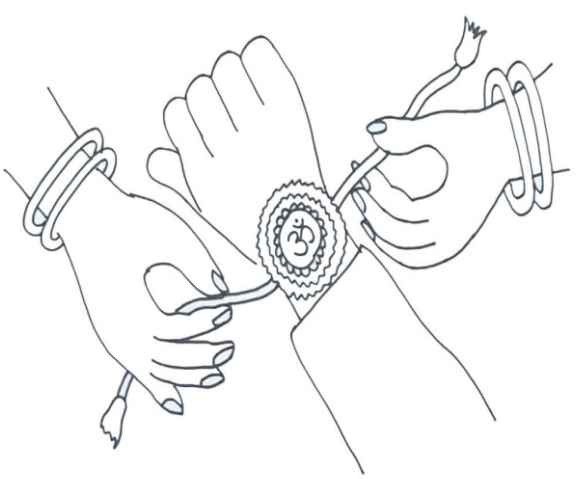

राखी का यह अनूठा बन्धन है, जिसमें भाई-बहन की रक्षा का वचन देता है तो बहना भाई की कलाई में पवित्र धागा बांधती है। सदियों से चली आ रही यह परम्परा भारतीय समाज की अमूल्य धरोहर है।

बन्धन। हालांकि बन्धन किसी को भी प्रिय नहीं होता है। लेकिन राखी का यह बन्धन भाई को ओजस्वी बनाता है। उसमें यह दायित्व बोध होता है कि उसे अपनी बहन का ख्याल रखना है। इस बन्धन में बंधते हुए वह खुशी-खुशी बहन के हाथों अपनी कलाई पर राखी बंधवाता है। यह ऐसी मर्यादा का बन्धन है जिमें भाई-बहन का स्नेह समाया हुआ है।

इस पर्व के पीछे संदेश यही है कि भाई-बहन के समान पवित्रता संसार में सब लोगों को धारण करनी चाहिए। इससे मनुष्य सोलह कलाओं से सम्पन्न हो सकता है। लेकिन अगर कहीं अपवित्रता का दाग है तो वह सम्पूर्ण नहीं हो सकता। इसलिए भी इस पवित्र महात्म्य का अपना प्रभाव है।

ईश्वरीय सन्देश

भाई-बहन ने पवित्र रिश्ते की महत्ता को समझने, एक श्रेष्ठ और मूल्यनिष्ठ समाज की स्थापना करने और पूरे विश्व को ऐसे ही पवित्रता के संकल्प में बांधना होगा। हमें समझना चाहिए कि मानव जाति में हम सब आपस में भाई-बहन हैं। इसलिए एक-दूसरे की पवित्रता की रक्षा के लिए कृतसंकल्प रहना चाहिए। रक्षाबन्धन की तरह ही हमें अपनी मर्यादा के बन्धन में बंधना होगा। रक्षाबन्धन का पर्व हमें यही संस्कार देता है। ❑

पता : मकान नं0 24,
अयोध्या धाम कालोनी, लक्ष्मणपुर, शिवपुर,
वाराणसी, उ0प्र0

राष्ट्र निर्माण में साहित्यकार की भूमिका

डाक्टर ऊषा अरोड़ा

लेखक की लेखनी एक ऐसा शस्त्र है जो बिना बोले अपनी अभिव्यक्ति को अपनी लेखनी के माध्यम से कह देता है यदि लेखक बादलों की ऊंचाई छूता है उसमें उभरते रंगों को चित्रित करता है तो दूसरी ओर धरती की दरारों, टूटे मानव की बिगड़ती दशा भी उसे झझोर देती है परिवार से लेकर राष्ट्र तक का हित इसकी परिधि में है यदि प्रेम के गीत रोमांचित कर सकते हैं तो देश प्रेम के गीत देशवासियों में जोश और उत्साह भी भर सकते हैं मानवता का हित चिंतन राष्ट्रीयता का संरक्षण जीवन की सद्गति का प्रचार प्रसार साहित्यकार का कर्तव्य है साहित्यकार अपनी कृति के माध्यम से लोकाचार और लोक नीति का निर्धारण कर समस्याओं का समाधान करता है आज साहित्यकार का दायित्व बहुत अधिक बढ़ गया है एक ओर प्राचीन साहित्य ज्ञान राशि का अनंत भंडार है तो दूसरी ओर विश्व साहित्य से ज्ञान विज्ञान के नए तत्व हैं नए और पुराने ज्ञान भंडार को अपनी भाषा के माध्यम से साहित्य प्रेमियों और देशवासियों तक पहुंचना है सजग साहित्यकार सामाजिक असमंजस्य अनुशासनहीनता अनीति और अन्याय के प्रति विद्रोह प्रकट करता है राजनीति के प्रति सचेत करना भी साहित्यकार का दायित्व है जागरूक साहित्यकार साहित्य रूपी दर्पण में समाज का प्रतिबिंब उतार देता है छाक्टर विजेंद्र स्नातक लिखते हैं हिंदी के साहित्यकारों में मुंशी प्रेमचंद को हम उच्च कोटि का समर्थ कलाकार मानते हैं उनकी रचनाओं में प्राय तत्कालीन भारतीय समाज तथा राजनीति का वर्णन ही मुख्य रूप से पाया जाता है साहित्य चरित्र निर्माण का अचूक साधन है कविता कहानी निबंध नाटक उपन्यास सभी ने चरित्र निर्माण में योग किया है कबीर बिहारी रहीम और वृदं के दोहे मानस के उपदेश कामायनी का आनंदवाद महादेवी का विरह मैथिलीशरण गुप्त की राष्ट्रीयता निराला का विद्रोह सुभद्रा कुमारी चौहान की ममता चरित्र निर्माण के साक्ष्य हैं प्रेमचंद की कहानियां और उपन्यास प्रसाद के नाटक रामचंद्र शुक्ल के निबंध आदि चरित्र निर्माण की दिशा में महत्व भूमिका है लेखन की शक्ति को तुलसीदास के मानस में प्रभावित किया है और हिंदू जनता को सोचने समझने की दिशा बदलती है अपने स्वार्थ में लिप्त मत हो जावो भाव को प्रसाद जी ने बहुत सुंदर ढंग से कहा है औरों को हंसते देखो मनु हंसो और सुख पाओ अपने सुख को विस्तृत कर लो सबको सुखी बनाओ मुंशी प्रेमचंद ने चरित्र निर्माण के हर पहलू को बहुत बारीकी से देखा और समाज को एक सही दिशा देते हुए लिखा है लजा और विनय ही भारत की देवियों का आभूषण है एक कठोर दंड वर्षों के प्रेम को मिट्टी में मिला देता है साहित्यकार समाज के हर पहलू पर विवेचन करते हुए मुख्य रूप से जब चरित्र निर्माण की बात करता है तो स्वस्थ समाज की कल्पना उसके मस्तिँक में होती है इसी तरह साहित्यकार की राष्ट्र निर्माण में भी एक जीवंत प्रक्रिया है अप्रत्यक्ष रूप से चरित्र निर्माण का वह रष्ट्र की नींव मजबूत करता है तो प्रत्यक्ष रूप से साहित्यकार राष्ट्र की स्थिति के अनुसार अपनी कृतियों से जनता को जागरूक करता है देश प्रेम के गीतों से जोश और उमंग भरता है माखनलाल चतुर्वेदी की लोकप्रिय कविता आज भी प्रेरणा देती है मुझे तोड़ लेना बनमली उसपथ पर देना तुम फेक मातृभूमि पर शीष चढ़ाने जिस पथ पर जावे वीर आनेक मुंशी प्रेमचंद सुदर्शन यशपाल धर्मवीर भारती की कथा साहित्य में धर्म आडम्बरपर तीखा प्रहार किया तो उपेंद्रनाथ अश्क, रामकुमार वर्मा, जयशंकर प्रसाद, लक्ष्मी नारायण आदि के नाटकों में धर्म के सत्य का रूप उतरा सामाजिक विषमता घृणा राष्ट्र निर्माण में बाधक है साहित्यकार का दायित्व अश्लील साहित्य लिखकर पैसा कमाना या अपने स्वार्थ के लिए झूठा यश प्राप्त करना कदापि नहीं है केवल मनोरंजन के लिए लिखा गया साहित्य शाश्वत नहीं हो सकता हम अपने समाज को अश्लील रचना देकर समाज और राज का भविष्य अंधकार में कर दें इसके लिए आने वाली पीढ़ी हमें कदापि क्षमा नहीं करेगी। ❑

पता : कन्हैया सदन, खतरीपाड़ा,
अतरौली, (अलीगढ़) 202280
मो0 : 844 5 96 2671

सौतेली माँ का मतलब 'सौतेलापन' नहीं है !

- चन्द्रकान्ता शर्मा

हमारे एक निकट के रिश्तेदार 'क' हैं, जिनकी पत्नी की मृत्यु हो गई थी। इसके बाद उन्होंने दूसरी शादी कर ली। नई आने वाली पत्नी की उम्र 22 वर्ष से अधिक न थी। मि. 'क' के पूर्व पत्नी से पहले ही पाँच सन्तानें थीं। जिनमें से सबसे बड़े लड़के की उम्र 24 वर्ष थी और जिसकी कि शादी वे तीन वर्ष पहले कर चुके थे तथा उससे उनके एक पौत्र भी हो गया था।

मि. 'क' की माँ- नयी बहू की आलोचना सारे मोहल्ले में हमेशा करती रहती हैं। कभी कहती हैं बहू-बच्चों को नहीं चाहती। पोते बहू से कुढ़ती है। उससे बराबरी करना चाहती है। कभी उनका आरोप यह होता है कि उसने तो मि. 'क' का दिमाग ही पलट दिया है और वे बिल्कुल दब्बू बन गए हैं। वे उसके सामने कुछ भी नहीं बोल पाते। कभी कहती हैं- पर का खर्च बढ़ गया है। 'क' की पत्नी का अपना हाथ खर्च बहुत अधिक है। छोटे बच्चों की मारती और डांटती है।

अक्सर ये कुछ बातें हैं जो प्रत्येक सौतेली माँ के बारे में सुनने को मिलती हैं। सामाजिक परम्पराँ, कुछ इस तरह बन गई हैं कि सौतेली माँ का स्वरूप इससे बेहतर रूप में हमारे सामने आही नहीं पाता है।

होना यह चाहिए था कि जैसी स्थितियाँ मि. 'क' के साथ रही थीं। उन्हें देखते हुए शादी का प्रस्ताव ही नहीं रखना चाहिए था। चूंकि अब वे शादी कर चुके हैं। अतः उन्हें अब स्थितियों का सामना करने के लिए सक्षम होना चाहिए, वर्ना घर इस तरह तो धीरे-धीरे कलह, ईर्ष्या और द्वेष से चौपट हो जाएगा। उन्होंने शादी घर चौपट करने के लिए थोड़े ही की थी।

सौतेली माँ से सही व्यवहार पाने के लिए स्वयं सौतेली माँ की भूमिका तो अहमियत रखती ही है लेकिन, इसके लिए बच्चों, परिवार के अन्य सदस्यों तथा पति महाशय की ओर से मिलने वाले सहयोग से भी नहीं नकारा जा सकता। जैसा व्यवहार घर के समझदार बच्चे सौतेली माँ से चाहते हैं, उनकी भी अपनी भूमिका है। इसी तरह परिवार के अन्य सदस्य तथा पति की भी।

बच्चों के लिए :

सौतेली माँ का व्यवहार बच्चें के प्रति स्नेहिल और उदार सर्वप्रथम होना चाहिए। उसे यह कभी नहीं सोचना चाहिए कि वह उस घर में दूसरी बनकर आयी है। यदि बच्चे अबोध हैं तो उनके कपड़े, धुलाई, सिलाई, लिखाई-पढ़ाई तथा नहलाने का दायित्व अपने ऊपर लेना चाहिए। एसे कार्य करते वक्त उसमें कभी भी झूंझलाहट और खीझ के भाव नहीं उत्पन्न होने चाहिए। वे बच्चे अबोध हैं, उन्हें स्नेह और मार्ग दर्शन की आवश्यकता है अन्यथा वे भटक जाएंगे और भविष्य में वे आपके लिए सिरदर्द बन जाएंगे।

बच्चे कुछ बड़े और समझदार हैं तो उनकी भावनाओं को पूरी तरह तबोज्जह देनी चाहिए, वर्ना इसके अभाव में माँ के प्रति उनका उपेक्षाभाव बढ़ता है। एक तरह से सौतेली माँ यदि अपने से पूर्व बच्चों को अपने भाई-भतीजे मानकर भी व्यवहार करे तो कोई दुविधा उत्पन्न नहीं होती।

इसके साथ ही समझदार बच्चों का भी दायित्व है कि वह अपनी सौतेली माँ को सिर्फ माँ समझें। यदि कभी-कभार वह उन्हें डांटती भी हैं, तो उन्हें उसका बुरा नहीं मानना चाहिए। अपनी दूसरी माँ

को भी उन्हें अपनी पहली माँ की तरह ही पूरा आदर भाव देना चाहिए। माँ जब उस समस्या का समाधान नहीं कर सके तब उन्हें बिना शिकायत के वही समस्या पिता को बतानी चाहिए।

पति के लिए :

यहाँ आपसे यह अपेक्षा कदापि नहीं की जा रही कि पति को परमेश्वर मानकर सदैव पूजें और उसकी हर बुरी बात को अंस्वीकार करती रहें।

लेकिन पत्नी के रूप में आपकी जो मर्यादाएं हैं, उन्हें समझकर पूरी तरह निभाएं। आप यह क्यों भूल जाती हैं कि सारा सुख होते हुए भी उन्होंने अकेलेपन से घबराकर आपको जीवन-साथी के रूप में चुना है। आप उनके सुखा-दुख की संगिनी हैं। यह गरूर कभी भी मत लाइये कि दूसरी पत्नी होने से पति महाशय आपकी गैर जरूरी आवश्यकताएं भी पूरी करें। पति पर अनधिकृत रूप से रोब या अधिकार जमाने की कोशिश न करें।

सम्भव है इनसे आपके पति भीतर ही भीतर हीनता बोध करने लगें और आप उनके उपेक्षा भाव की शिकार हो जायें। पति को यह भाव कदापि नहीं होने दें कि आप दूसरी पत्नी के रूप में आई हैं। अपने सद्व्यवहार से पति का दिल जीतें। पति कभी पहली पत्नी की तारीफ या बातें करने लगे तो शांति से सुनें, कभी भी खीझें या कुण्ठित न हों। वह भी तो आप ही की बहिन थीं।

पति महाशय का दायित्व है कि वे अपनी दूसरी पत्नी से भी पहली पत्नी की ही तरह व्यवहार करें। न तो आप दूसरी पत्नी से इतना प्रेम ही जताएं कि आपके बच्चे आपके प्रति पूर्वाग्रह बना लें और आपकी पत्नी भी उन्हें उपेक्षित समझने लगे। कोई एकसी नई बात को जन्म दे, जो पत्नी, बच्चों और परिवार के सदस्य को विलक्षण लगे। दूसरी शादी को असामान्य कभी नहीं मानें।

आपकी उम्र चूंकि आपकी दूसरी पत्नी से ज्यादा है, इसका मतलब यह नहीं कि आपे घूमें-फिरें या सिनेमा-पार्क आदि न जायें। आप पहली पत्नी के साथ भी तो घूमते रहे हैं। अतः दूसरी पत्नी की दुःख भावनाओं का पूरी तरह ख्याल रखें। उसे यह महसूस नहीं हो कि उसे शादी का आनन्द ही नहीं आया। उसे पूरी तरह महसूस हो कि बाह्य और आन्तरिक जीवन खोखला नहीं, आनन्द से सरोबार है।

दूसरी होने वाली पत्नी के बच्चों को भी उतना ही स्नेह दें, जितना पहली वाली पत्नी से उत्पन्न बच्चों को दे रहे हैं। समानता का व्यवहार करें। दूसरी पत्नी के बच्चों को कोई चीज लाए हैं तो देर-सवेर पहली पत्नी के बच्चों को भी वे चीजें लाकर दें, ताकि बच्चों में हीनता भाव न पनपें। फिर कौन-सी शक्ति ऐसी है जो आपके परिवार में विघटनों की दरार डाल दें। आपका परिवार खुशियों की सुगंध से सदैव महमहकता रहेगा।

परिवार के सदस्यों के लिए :

जब तक उनके परिवार के कथित व्यक्ति की दूसरी शादी नहीं हो जाती तब तक वे उत्साही और खुश रहते हैं। लेकिन शादी होने के बाद धीरे-धीरे पूर्वाग्रह घर करने लगते हैं और दूसरी माँ के प्रति अपेक्षाकृत उपेक्षा भाव गहराता चला जाता है। इसके लिए परिवार के सदस्यों को नयी मान्यताएं स्थापित करनी चाहिए और उन्हें अपनी उम्र के हिसाब से सौतेली माँ को आदर व स्नहेभाव देना चाहिए।

विशेषकर सास का दायित्व हो जाता है कि वह अपनी बहू को अपनी बेटी के तुल्य समझें। उसे यह अच्छी तरह समझ लेना चाहि, कि कठोर व्यवहार उसके पौत्र-पौत्रियों के प्रति उपेक्षा को जन्म देगा, जो हर स्थिति में कष्टकर और असह्य होता है। वह दूसरे घर से दूसरी पत्नी बनकर आई है। अतः उसके संकोचभाव को दूर करें और उसके व्यवहार में कठोरता न आने दें।

सौतेली माँ का परिवार के सदस्यों के प्रति सदैव सद्व्यवहार और सम्मान होना चाहिए। यह ध ाारणा नहीं बनानी चाहिए कि वह दूसरी पत्नी के रूप में आई है। अतः वह मान्यताओं के उपहास की पात्र है। उसे उन मान्यताओं और आचरणों से भी बचना चाहिए जो अक्सर सौतेली माँ के ऊपर मढ़े जाते रहे हैं। उन्हें वे धारणा, निर्मल सिद्ध कर देनी चाहिए। जिनसे उसके चरित्र पर आंच आती हो। ❑

पता : 124/61-62, अग्रवाल फार्म,
मानसरोवर, जयपुर-302020,(राजस्थान)
फोनः-0141-2782110

'सहकारिता'
पत्रिका के नियम

1. सहकारिता मासिक पत्रिका है। इसका प्रकाशन हर महीने के तीसरे सप्ताह में होता है।
2. सहकारिता का उद्देश्य सहकारिता तथा विकास सम्बन्धी योजनाओं और समाचारों का प्रचार करना, सहकारिता के उद्देश्य और उपयोग से जनता को परिचित कराना तथा देश की आर्थिक समृद्धि के लिये प्रेरित करना है।
3. इसका वार्षिक मूल्य रू0 150.00 तथा आजीवन सदस्यता के लिए रू0 1500.00 मात्र है।
4. प्रकाशन, विज्ञापन, ग्राहक और प्रबन्ध सम्बन्धी पत्र-व्यवहार सम्पादक सहकारिता पो.बा. नं. 136 लखनऊ से करना चाहिए।
5. सहकारिता में प्रकाशित रचनाओं में प्रकट किये गये विचारों से पूर्णतः अथवा अंशतः सम्पादक का सहमत होना आवश्यक नहीं है।
6. सहकारिता पत्रिका के न मिलने की सूचना सम्पादक को मास के भीतर मिलनी चाहिए अन्यथा दूसरी प्रति भेजना सम्भव न होगा।
7. सहकारिता में प्रकाशनार्थ सामग्री-लेख समाचार आदि कागज मे एक ही ओर लिखकर निम्न पते पर भेजना चाहिए।

सम्पादक
सहकारिता
पोस्ट बाक्स नं0 136
लखनऊ-226001

'सहकारिता' पत्रिका हेतु विज्ञापन की दरें

1-doj ijk lk"B	: 0	15]000-00
2-fof'k"V foKkiu ¼vkV ijij ij½	: 0	10]000-00
3-lk/kkj.k ijk lk"B	: 0	5]000-00
4-vk/kk lk"B	: 0	3]000-00
5-pkFkkbZ lk"B	: 0	1500-00

'सहकारिता' साप्ताहिक एवं मासिक का शुल्क

❑ एक प्रति-सहकारिता साप्ताहिक	रू0	3.00
❑ एक प्रति-सहकारिता मासिक	रू0	15.00
❑ वार्षिक-सहकारिता साप्ताहिक	रू0	150.00
❑ वार्षिक-सहकारिता मासिक	रू0	150.00
❑ सहकारिता साप्ताहिक (आजीवन)	रू0	1500.00
❑ सहकारिता मासिक (आजीवन)	रू0	1500.00
❑ साप्ताहिक एवं मासिक संयुक्त (आजीवन)	रू0	3000.00

प्रबन्ध निदेशक, यू.पी. को आपरेटिव यूनियन लि0 14, डा0 भीमराव अम्बेडकर मार्ग, लखनऊ के पते पर शीघ्र मनीआर्डर भेजकर ग्राहक बनें।

वी0पी भेजने का नियम नहीं है।

कृपया पत्र- व्यवहार निम्न पते पर करें:-

सम्पादक
सहकारिता
यू.पी. कोआपरेटिव यूनियन लि0
14, डा0 भीमराव अम्बेडकर मार्ग,
लखनऊ-226 001.

SAHKARITA
August - 2024

RNI No.-13466/1963
Postal Regd. No. GPOLW-NP/181/2024-26
Total No of Page - 44
Postal Date : 18 & 19 Every Month

सहकारिता के सिद्धान्त

स्वैच्छिक और खुली सदस्यता

प्रजातांत्रिक सदस्य–नियंत्रण

सदस्य की आर्थिक भागीदारी

शिक्षा प्रशिक्षण और सूचना

स्वायत्तता और स्वतंत्रता

सहकारी समितियों में परस्पर सहयोग

सामाजिक कर्त्तव्य बोध